तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष-7, अंक- 12, नवंबर 2019, मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

शिक्षा हमें जगाती है
शोषण से बचाती है

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**
प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में** व्यक्ति की गरिमा और
राष्ट्र की एकता और अखंडता
सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् दो हज़ार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

नवंबर 2019

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
डॉ. महावीर सिंह
प्रधान सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ. राकेश गुप्ता
राज्य परियोजना निदेशक
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

डॉ. बलकार सिंह
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

प्रदीप कुमार
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

सतिन्द्र सिवाच
संयुक्त निदेशक (प्रशासन),
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by delhi press patra prakahsna Pvt. Ltd. at its printing press PSPC Press 50, DLF Industrial Estate,

Faridabad- 121003,(Haryana)

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"जो धर्म स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व सिखाता है, वही सच्चा धर्म है"
- बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर

- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हमारी प्राथमिकता : कँवर पाल 5
- प्रभावी नीतियों के सुखद परिणाम 6
- शिक्षण को बेहतर बनाने की कोशिश है- 'निष्ठा' 8
- छात्रा सुरक्षा का पर्याय बनी छात्रावाहिनी योजना 9
- कल्चरल फेस्ट - म्हारी सभ्यता व संस्कृति का अनूठा संगम 16
- नन्हे वैज्ञानिकों के दिलों पर अनूठी छाप छोड़ गई विज्ञान शैक्षणिक यात्रा 12
- रचनात्मकता को बढ़ाने में शिक्षकों की अहम भूमिका 14
- किशोरावस्था शिक्षा ज़रूरी क्यों ? 16
- विलक्षण प्रतिभा की धनी है हिमांशी 18
- खेल-खेल में विज्ञान 20
- धूल से अटे स्कूल को किया गुलो-गुलज़ार 22
- 'सक्षम हरियाणा' के पॉवर हाउस : सुदर्शन पुनिया 26
- बाल सारथी 28
- हर स्थिति से जूझने की क्षमता विकसित करें 30
- विद्यार्थियों के लिए आदर्श बनें 31
- Draft National Education Policy... 32
- ICE Age: Information, Communication, Entertainment 36
- The Long Winter Story Folktales Stories for Kids 38
- Being a Teacher 40
- Daily Dilemma of Students 42
- E-Commerce as a career path 43
- Amazing Facts 48
- Quiz 49
- आपके पत्र 50

मुखपृष्ठ चित्र: डॉ. प्रदीप राठौर

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

शैक्षिक व्यवस्था का प्रमुख ध्रुव है शिक्षक

शिक्षक शैक्षिक प्रक्रिया एवं सामाजिक व्यवस्था का आधारभूत स्तम्भ है। शिक्षक एवं शिक्षा घनिष्ठ रूप से अन्तर्सम्बन्धित हैं। सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया जिसका उद्देश्य मानव निर्माण एवं राष्ट्र की प्रगति करना है, का स्रोत शिक्षक ही है। यह सही है कि शिक्षण के लिए समुचित आधारभूत ढाँचे की भी आवश्यकता होती है, इसे सुधारना आवश्यक है। लेकिन इससे भी अधिक बल इस बात पर देने की आवश्यकता है कि शिक्षा देने वालों यानी शिक्षकों को समुचित प्रशिक्षण मिले। उन्हें सही शिक्षण विधियों, बाल मनोविज्ञान, शिक्षा के सामाजिक सरोकारों या शिक्षाशास्त्री सिद्धांतों का और बालकों व समुदाय से अर्थपूर्ण संवाद कैसे स्थापित किया जाए आदि बातों का समुचित ज्ञान हो।

इस मामले में केंद्र और प्रदेश सरकार बहुत गंभीरता से कार्य कर रही है। 'निष्ठा' (नेशनल इनिशिएटिव फॉर स्कूल हैड्स एंड टीचर्स हॉलीस्टिक एडवांसमैंट) कार्यक्रम के माध्यम से देश भर के राजकीय विद्यालयों के 42 लाख शिक्षकों को किताबी ज्ञान के साथ-साथ खेल-खेल में पढ़ाई, लर्निंग आउटकम, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस आदि का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रदेश के अध्यापक आजकल इस कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षण पा रहे हैं। विद्यालय शिक्षा विभाग हरियाणा ने वर्ष 2018 से 'टीचर एजुकेशन' शाखा के माध्यम से 'प्रशिक्षण प्रबंधन प्रकोष्ठ' यानी टीएमसी का गठन करके अध्यापक प्रशिक्षण के कार्य को चला रखा है। डाइट्स को 'एक्टिव ट्रेनिंग हब्स' के रूप में तबदील किया गया है। यानी अब पूरा फोकस शिक्षकों को प्रशिक्षित करके शिक्षा की गुणवत्ता संवर्धन की सुनिश्चितता पर है। हर्ष का विषय यह है कि प्रदेश के शिक्षक भी पूरे मनोयोग से इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों से जुड़ कर बदलते जमाने की शैक्षिक चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए तैयार हो रहे हैं।

आपकी शैक्षिक यात्रा में 'शिक्षा सारथी' सदैव आपके साथ है। शिक्षा के क्षेत्र में आपके द्वारा किए जा रहे नवाचारों, आपकी प्रभावी शिक्षण विधियों तथा अनुभवों की हमें हमेशा प्रतीक्षा रहती है, ताकि पत्रिका के माध्यम से उन्हें प्रदेश के सभी शिक्षकों तक पहुँचाया जा सके।

-संपादक

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हमारी प्राथमिकता : कँवर पाल

प्रदेश के नये शिक्षा मंत्री श्री कँवर पाल ने अपना पद भार संभाल लिया है। विद्यालय शिक्षा विभाग के अधिकारियों के साथ मिलकर वे शिक्षा के विकास की योजनाओं पर काम करने में जुट गए हैं।

श्री कँवर पाल ने 'शिक्षा सारथी' से बातचीत करते हुए बताया कि शिक्षा विभाग का दायित्व निश्चित तौर पर उनके लिए एक चुनौती है, लेकिन इस चुनौती को स्वीकार करने के लिए वे पूरी तरह से तैयार हैं। उनका मानना है कि बीते पाँच वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में बहुत सुधार हुए हैं। सुधार आगे भी जारी रहेंगे क्योंकि विकास और सुधार एक सतत चलने वाली प्रक्रिया होती है। उन्होंने कहा कि बच्चे देश का भविष्य हैं। भविष्य की बुनियाद को मजबूत करने के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा अति आवश्यक है। प्रदेश के हर विद्यार्थी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देकर उसका सर्वांगीण विकास किया जा सके, इसके लिए योजनाबद्ध ढंग से कार्य किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाएगा कि प्रदेश का कोई भी बच्चा अपने शिक्षा के अधिकार से वंचित न रहे। शिक्षा सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल है। वे इस बात पर पूरा ध्यान देंगे कि राजकीय विद्यालयों में इंफ्रास्ट्रक्चर की किसी प्रकार की कोई कमी न हो। इस बात पर विशेष बल दिया जाएगा कि दूरदराज और गाँवों के विद्यालय भी भौतिक सुविधाओं से पूरी तरह से लैस हों, साथ ही वहाँ अध्यापकों की भी किसी प्रकार की कमी न रहे।

श्री कँवर पाल का जन्म 8 मई, 1960 को यमुनानगर जिले के बहादुरपुर नामक गाँव में माता श्रीमती जगवती देवी और पिता श्री मान चंदन सिंह के घर में हुआ। अत्यंत साधारण परिवार से संबंध रखने वाले श्री कँवरपाल विद्यार्थी काल में पढ़ाई में तो मेधावी थे ही, विद्यालय की अनेक गतिविधियों में भी चाव से भाग लेते थे। इनकी प्राथमिक शिक्षा अपने ही गाँव के विद्यालय में हुई। दसवीं की कक्षा में अपने गाँव में इन्होंने सर्वाधिक अंक प्राप्त किए। इसके उपरांत यमुनानगर के एमएलएन कॉलेज में उच्च शिक्षा के लिए प्रवेश लिया। अपनी माटी के प्रति ऐसा जुड़ाव मन में था कि कहीं नौकरी करने का विचार नहीं बना। कृषि कर्म और समाज सेवा में ही समर्पित भाव से जुट गए। धार्मिक कार्यों में रुचि और एक आम जन के सुख-दुःख के साथ सीधा जुड़ाव रखने के कारण अपने क्षेत्र में इनका नाम काफी सम्मान से लिया जाने लगा। 1990 में भाजपा में शामिल होकर राजनीतिक करियर की शुरुआत की। दो बार पार्टी के जिला महासचिव और तीन बार राज्य महासचिव बने। 1991 में छछरौली से पहली बार विधानसभा चुनाव लड़ा था। 2004, 2014 व 2019 में आप विधायक बने। 13वीं विधानसभा में विधानसभा अध्यक्ष पद के कार्यभार को बखूबी संभाला। 14 वीं विधानसभा में आपको शिक्षा मंत्री का दायित्व मिला।

पर्वतीय क्षेत्रों में भ्रमण, समाचार पत्रों व सामयिक पत्रिकाओं से अपने ज्ञान को अद्यतन बनाये रखना इनका शौक है। ऐतिहासिक तथ्यों के बारे में जानना इन्हें सदैव भाता है। श्रीमद्भगवद् गीता को वे अपने जीवन का सबसे बड़ा प्रेरणा-ग्रंथ मानते हैं। पूरी ईमानदारी और निष्ठा से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने वाले श्री कँवर पाल के अनुभव व रचनात्मक सोच से अब शिक्षा विभाग लाभान्वित होगा। 'शिक्षा सारथी' की ओर से इन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ।

-शिक्षा सारथी डेस्क

प्रभावी नीतियों के सुखद परिणाम

प्रमोद कुमार

देश में शिक्षा के क्षेत्र में कुछ राज्य अद्भुत कार्य कर रहे हैं तथा नीति आयोग द्वारा एसईक्यूआई (स्कूल एजुकेशन क्वालिटी इंडेक्स) बनाकर इसे एक प्रतियोगिता का रूप दे दिया गया है। प्रत्येक राज्य एसईक्यूआई पर अपनी रिपोर्ट डालता है जिसके आधार पर नीति आयोग उनकी रैंकिंग करता है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम में बच्चे को स्कूल उपलब्ध करवाने पर ध्यान दिया गया है। अब इससे आगे बढ़कर गुणवत्तापरक शिक्षा देने की ओर कदम बढ़ाए जा रहे हैं। एसईक्यूआई में लर्निंग आउटकम्स, एफिशिएंट गवर्नेंस स्ट्रक्चर, प्रोवीज़न ऑफ नेसेसरी इंफ्रास्ट्रक्चर तथा इक्वीटेबल एकेडेमिक ऑपरचुनिटिस को शामिल करके ही राज्यों की वर्षवार रिपोर्ट बनाई जाती है। यह प्रयास अति सराहनीय है। जहाँ राज्यों द्वारा किए जा रहे प्रयासों को पहचान मिलती है, वहीं पर जो राज्य पिछड़ रहे हैं उन्हें भी प्रेरणा मिलती है। इसमें सभी राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों को शामिल किया गया है, वहीं छोटे राज्यों और बड़े राज्यों की भी श्रेणियाँ बनाई गई है।

यहाँ खुशी की बात ये है कि सितम्बर, 2019 में जारी की गई रिपोर्ट में हरियाणा राज्य द्वारा फिर से अपने स्थान में सुधार किया गया है। वर्ष 2016-17 की प्रगति के आधार पर जारी की गई रिपोर्ट में हरियाणा के प्रदर्शन में उत्कृष्ट सुधार के लिए सभी संबंधित को बधाई। इसका पूरा श्रेय राज्य के सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों और स्कूल मुखियाओं को जाता है जिनके द्वारा अपने स्कूलों में अपने विद्यार्थियों के साथ मिलकर बहुत ही शानदार कार्य किया गया है। इसके लिए वर्ष 2016-17 के वे सभी अधिकारी, निदेशक सैकेण्डरी शिक्षा, निदेशक मौलिक शिक्षा, राज्य परियोजना निदेशक तथा एससीईआरटी गुरुग्राम बधाई के पात्र हैं जिन्होंने उस समय के अतिरिक्त मुख्य सचिव के मार्गदर्शन में शानदार काम किया। उस समय के जिला स्तरीय अधिकारियों को, खण्ड स्तरीय अधिकारियों को बहुत-बहुत बधाई। जब भी कोई राज्य प्रगति करता है तो यह टीमवर्क से ही संभव है और प्रदेश में शिक्षा विभाग का प्रत्येक सदस्य स्वयं को टीम का सदस्य मानकर शानदार प्रयास कर रहा है। एसईक्यूआई की रिपोर्ट में 2015-16 तथा 2016-17 के मध्य हुए बदलाव को देखा जाए तो हरियाणा ने 2015-16 में 51 अंकों से 2016-17 में 69.5 अंक प्राप्त किए हैं। आठवें स्थान से सीधे तीसरे स्थान को प्राप्त किया है। तमिलनाडू और केरल ही प्रदेश से ऊपर हैं। यह अति हर्ष का विषय है कि प्रदेश ऊपरी तीन राज्यों में शामिल है। चेंज इन परफॉरमेंस ऑन द गर्वनेंस प्रोसेस आउटकम्स की बात की जाए तो प्रदेश ने 24.3 अंकों की वृद्धि की है तथा पूरे देश में प्रथम स्थान पाया है। इसके लिए अध्यापक स्थानान्तरण नीति, स्किल पासबुक जैसे कार्यक्रमों ने भारी मदद की है। बायोमैट्रिक हाजिरी, अध्यापक उपलब्धता तथा पारदर्शिता को बढ़ावा देकर ही यह स्थान प्राप्त किया है। हालांकि 2016-17 की रिपोर्ट में लर्निंग आउटकम्स को लेकर हरियाणा अभी पिछड़ रहा है, परन्तु यदि स्कूल में बच्चों के दाखिले की प्रतिशतता, ड्रॉप रेट आदि देखें तो हरियाणा का स्थान बहुत ऊँचे पायदान पर है और स्कूल भवन, पुस्तकालय, शौचालय, खेल के मैदान, प्रयोगशाला आदि के मामले में तो राज्य पहले ही तीन राज्यों में शामिल है।

आउटकम्स कैटेगरी की बात की जाए तो इसमें भी राज्य सुधार की ओर अग्रसर है तथा आन्ध्रप्रदेश, आसाम और उत्तरप्रदेश के साथ पहले चार में शामिल है। हरियाणा ने 10.6 प्रतिशत की वृद्धि करते हुए 2015-16 के 68.1

प्रतिशत के मुकाबले 2016-17 में 78.7 प्रतिशत अंक के साथ चौथा स्थान हासिल किया है। यह क्वालिटी इंप्रूवमैंट प्रोग्रोम के कारण हुआ है जो राज्य में वर्ष 2014-15 में आरम्भ किया गया था। एनईआर यानी नेट एनरोलमैंट रेशो एट एलीमैंटरी लेवल श्रेणी में राज्य द्वारा अपनी स्थिति 85 प्रतिशत से 86 प्रतिशत पर ले जाकर एक प्रतिशत की वृद्धि की है। यहाँ सबसे अच्छी बात यह है कि प्राथमिक से उच्च प्राथमिक में अवस्थांतर (Transition) के मामले में राज्य केरल के बाद दूसरे स्थान पर है 99.5 प्रतिशत के साथ। इसके लिए राज्य के सभी कर्मचारी अधिकारी बधाई के पात्र हैं। यदि उच्च प्राथमिक से माध्यमिक अर्थात् आठवीं से कक्षा नौवीं के अवस्थांतर की बात की जाए तो राज्य का स्थान तीसरा है। केरल, महाराष्ट्र तथा आन्ध्रप्रदेश इससे आगे हैं। हालांकि इस अन्तराल

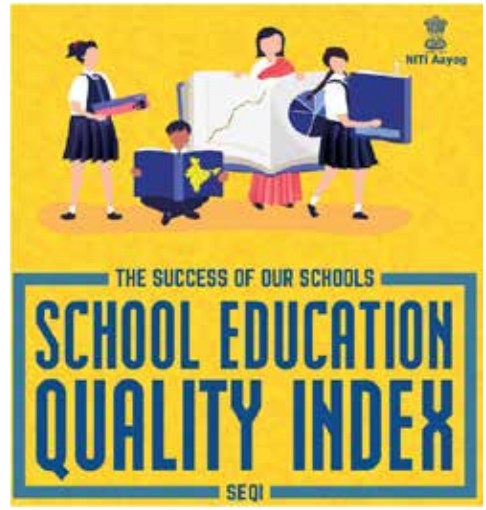

Figure C: Large States: Overall Performance and Rank, 2015-16 and 2016-17

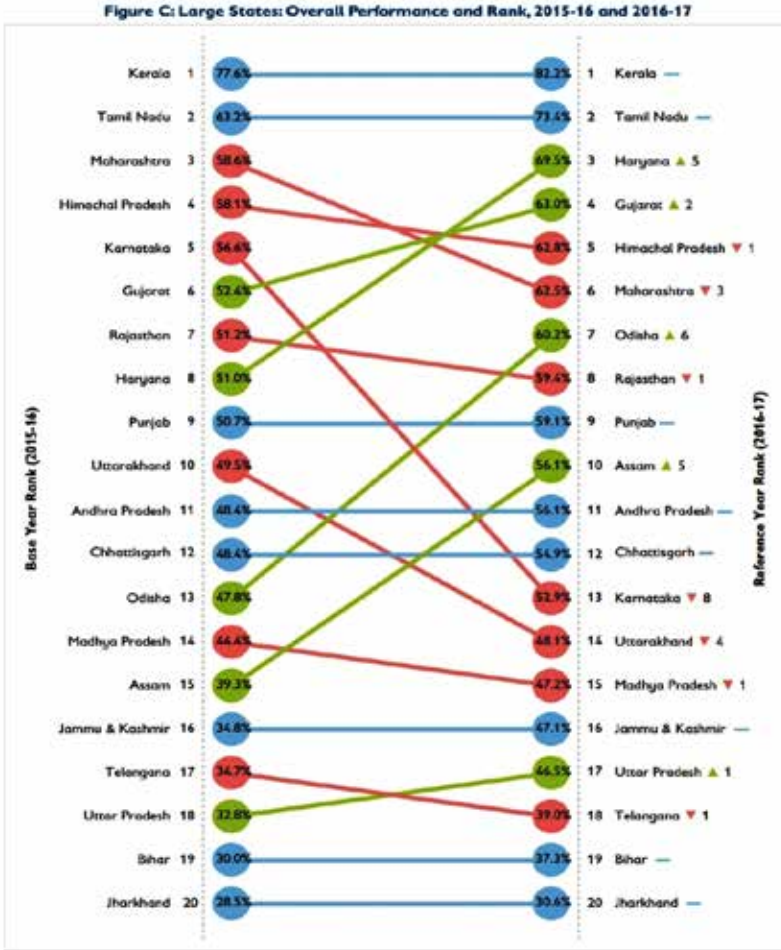

Small States: Among the eight Small States, five showed an improvement in their overall performance score between 2015-16 and 2016-17, of which three stood out (Meghalaya, Nagaland and Goa), with gains of 14.1, 13.5 and 8.2 percentage points respectively.

में हरियाणा ने 92.9 प्रतिशत से 97.7 प्रतिशत का मुकाम हासिल किया है जो अभूतपूर्व है।

आउट ऑफ स्कूल, शिक्षा के सार्वभौमिकीकरण और शिक्षा का अधिकार अधिनियम के मुख्य उद्देश्यों में शामिल है कि प्रत्येक बच्चा (6 से 14 वर्ष) स्कूल जाए। इस मामले में ड्रॉप आउट रेट कम करना पहला लक्ष्य है। वर्ष 2015-16 में आउट ऑफ स्कूल बच्चों को स्कूल में दाखिल करवाया। उसकी दर 75 प्रतिशत थी जो 2016-17 में बढ़कर 83.5 प्रतिशत हो गई और हरियाणा पूरे भारत में पाँचवे स्थान पर रहा। इसमें ऐसे संस्थानों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है जो प्रदेश में इस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। Humana People to People का विभिन्न जिलों में चल रहा कार्यक्रम मददगार साबित हो रहा है।

CAL (Computer Aided Learning) एक ऐसा विषय है जिसमें प्रदेश को बहुत काम करने की आवश्यकता है। मिडल स्कूलों में अभी कम्प्यूटर उपलब्ध करवाए जाने के मामले में राज्य पिछड़ रहा है तथा केवल 12.7 प्रतिशत स्कूल ही इसमें शामिल हैं जबकि पड़ोसी राज्य पंजाब का देश में तीसरा स्थान है। हालांकि हाई तथा वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के मामले में हरियाणा के 59.8 प्रतिशत स्कूलों में कम्प्यूटर की व्यवस्था है जिसमें प्रदेश भारत में तीसरे स्थान पर है।

इसके अतिरिक्त पुस्तकालय व्यवस्था का अवलोकन करें तो 2016-17 की स्थिति के अनुसार प्रदेश पंजाब तथा केरल के साथ दूसरे स्थान पर है। एनएसक्यूएफ-वोकेशनल शिक्षा के मामले में 2015-16 में प्रदेश 9.4 प्रतिशत स्कूलों में यह व्यवस्था देकर तीसरे स्थान पर था जो 2016-17 में 18.8 प्रतिशत विद्यालयों में वोकेशनल शिक्षा उपलब्ध करवा रहा है। राज्य में डाईट स्टाफ की स्थापना के बारे में 2016-17 में 59.3 प्रतिशत के स्थान पर 2016-17 में 91.3 प्रतिशत पर पहुँच गया है।

अब सभी आँकड़े ये दर्शाते हैं कि प्रदेश का शिक्षा विभाग सुधार के कार्यक्रमों के प्रति कृतसंकल्प है, लगातार प्रयासरत है तथा अपने स्थान को बेहतर बना रहा है। राज्य की पूरी टीम इसके लिए एकजुट होकर समन्वय से काम कर रही है। ये रिपोर्ट 2016-17 के आँकड़ों पर आई है। पिछले दो वर्षों में शानदार काम हुआ है। पूरे प्रदेश का अध्यापक आज अपने प्रत्येक विद्यार्थी के शिक्षण-अधिगम कार्यक्रम पर केन्द्रित हो गया है। प्रत्येक विद्यार्थी के लिए उसके सीखने के स्तर के अनुसार अलग योजना है। इस रिपोर्ट को लेकर सभी के पास एक अवसर है गर्व करने का, अपनी पीठ थपथपाने का और इस विश्वास को मजबूत करने का कि प्रयासों से ही सफलता प्राप्त होती है। सभी को बधाई। सच है- कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

कार्यक्रम अधिकारी
शैक्षणिक प्रकोष्ठ
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा
हरियाणा

शिक्षण को बेहतर बनाने की कोशिश है- 'निष्ठा'

डॉ. प्रदीप राठौर

प्रदेश के अध्यापक 'निष्ठा' नामक कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षण ले रहे हैं। वैसे यह कार्यक्रम पूरे देश में चलाया जा रहा है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा बनाये गये इस कार्यक्रम के माध्यम से देश भर के लाखों शिक्षकों को निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसमें पहली से आठवीं तक के बच्चों को पढ़ाने वाले 42 लाख अध्यापकों को शामिल किया जा रहा है।

'निष्ठा' यानी नेशनल इनीशिएटिव फॉर स्कूल हेड्स एंड टीचर्स होलीस्टिक एडवांसमेंट नामक शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम का मकसद स्कूली शिक्षा के स्तर को मजबूत बनाना है। योजना को केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री रमेश पोखरियाल निशंक द्वारा लांच किया गया है।

निष्ठा एकीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षकों के प्रशिक्षण में पुस्तकों की बजाय बच्चों के बौद्धिक विकास पर मुख्य रूप से फोकस किया गया है। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों की रचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करने और बढ़ावा देने के लिए शिक्षकों को प्रेरित किया जा रहा है। छात्र विविध स्थितियों को सँभालने में सक्षम होंगे और शिक्षक प्रथम स्तर के काउंसलर के रूप में कार्य कर सकेंगे।

कार्यक्रम के तहत सभी मौलिक शिक्षा स्तर के शिक्षक, मुखिया, खंड संसाधन केंद्र समन्वयक और क्लस्टर संसाधन केंद्र समन्वयक स्टेट रिसोर्स ग्रुप द्वारा प्रशिक्षित किए जा रहे हैं।

अंबाला के सीनियर रिसोर्स पर्सन डॉ.अवधेश कहते हैं कि बदलते वक्त के साथ-साथ अध्यापन में भी परंपरागत तरीके को छोड़ गए आधुनिक तरीकों को अपनाने की आवश्यकता है। अंबाला जिले में करीब 2300 अध्यापकों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। सबसे पहले अध्यापकों का ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन किया जाता है। प्रशिक्षण आरंभ होने से पहले अध्यापकों से ऑनलाइन कुछ प्रश्न पूछे जाते हैं, वहीं प्रशिक्षण सम्पन्न होने के बाद उन्हें ऑनलाइन प्रश्नों के जवाब देने होते हैं। इसका मकसद यही है कि यह जाना जा सके कि प्रशिक्षण के बाद उनकी सोच में किस प्रकार का बदलाव आया है।

शिक्षकों को दी जाने वाले इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में निम्नलिखित बातों को शामिल किया गया है:

- योग्यता आधारित शिक्षा और परीक्षण
- स्कूल को सुरक्षित रखने के उठाये जाने कदम
- व्यक्तिगत सामाजिक गुण को उभारना
- शिक्षा के क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग
- ध्यान केंद्रित करने और शरीर को स्वस्थ रखने के लिए योग
- लाइब्रेरी, इको-क्लब, यूथ क्लब, किचन गार्डन आदि की अधिक से अधिक जानकारी
- हर तरह की परिस्थिति में स्कूल में नेतृत्व करने के गुण
- पर्यावरण से संबंधित जानकारी
- प्री-स्कूल, पूर्व व्यावसायिक शिक्षा

निष्ठा योजना शिक्षक प्रशिक्षण अभियान के मुख्य चरण-

निष्ठा योजना शिक्षक प्रशिक्षण अभियान 2019 को सफल बनाने के लिए कुछ मुख्य चरणों पर काम किया जाएगा, जो निम्नलिखित हैं:

1. प्रशिक्षण अभियान तीन चरणों में चलेगा और शिक्षक चाहें तो मोबाइल एप के माध्यम से भी जानकारी ले पाएँगे।
2. प्रशिक्षण अभियान में भाषा, गणित, सामाजिक विज्ञान पर मुख्य रूप से फोकस होगा।
3. शिक्षकों की ट्रेनिंग की ऑनलाइन निगरानी की जाएगी।
4. ट्रेनिंग के दौरान अटेंडेंस की भी जाँच की जाएगी।
5. किसी तरह की परेशानी आने पर काउंसलिंग दी जाएगी।
6. छात्रों की क्या परेशानियाँ हैं, उनको समझने के लिए स्पेशल फोकस ट्रेनिंग दी जाएगी।

drpradeeprathore@gmail.com

छात्रा सुरक्षा का पर्याय बनी छात्रावाहिनी योजना

सत्यवीर नाहड़िया

प्रदेश सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा प्रारंभ की गई निःशुल्क छात्रा वाहिनी योजना छात्रा सुरक्षा के पर्याय के रूप में उभर रही है। गत वर्ष हरियाणा दिवस के अवसर पर प्रारंभ की गई इस परियोजना में नवीं से बारहवीं कक्षा में अध्ययनरत छात्राओं के आवागमन हेतु स्कूल प्रबंधन समिति, ग्राम पंचायत व अभिभावकों के रचनात्मक सहयोग से वाहन लगाए गए हैं, जिनके आर्थिक पक्ष की समस्त अदायगी प्रदेश सरकार का शिक्षा विभाग करता है।

रेवाड़ी जिले के खोरी स्थित राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्राएँ एवं अभिभावकों को इस नवाचारी प्रेरक योजना का भरपूर लाभ मिल रहा है। विद्यालय के नौ विभिन्न रूटों से करीब एक दर्जन प्राइवेट वाहनों द्वारा सैकड़ों छात्राएँ विद्यालय पहुँचती हैं। उल्लेखनीय है कि पहले ये सभी लड़कियाँ पैदल या साइकिल से विद्यालय आती थीं तथा वर्षभर रास्ते में असामाजिक तत्त्वों द्वारा फब्तियाँ कसने, छेड़छाड़ करने, पीछा करने जैसी शिकायतें विद्यालय प्रबंधन एवं अभिभावकों को मिलती रहती थीं, किंतु छात्रावाहिनी की इस व्यवस्था के बाद अब उपरोक्त सभी समस्याएँ समाप्त हो गई हैं। वाहन चालक के भी संबंधित छात्राओं के गाँव या परिवार से होने के चलते उन्हें अतिरिक्त सुरक्षा भाव प्राप्त हो रहा है। छात्राओं का समय अनुसार आवागमन तथा आपसी हास-परिहास से स्वस्थ शैक्षणिक माहौल में भी इजाफा हुआ है। गत वर्ष हरियाणा भर में दसवीं की परीक्षा में छठे स्थान पर रही बास बटोड़ी निवासी छात्रा पूजा ने बताया कि वह इस योजना के चलते सुरक्षा भाव से आवागमन करती है।अन्य रूटों से आने वाली छात्राओं में प्रियंका, खुशी, ललिता शर्मा का मानना है कि इस योजना से छात्राओं को सुरक्षा के साथ समय पालन, अनुशासन, शिष्टाचार तथा नेतृत्व के गुणों में निरंतर वृद्धि हो रही है।

खोरी स्कूल के छात्रावाहिनी प्रकोष्ठ के प्रभारी प्राध्यापक संदीप कुमार ने बताया कि उक्त परियोजना लागू होने के बाद सभी 127 छात्राओं की उपस्थिति प्रतिशतता भी बढ़ी है। उन्होंने बताया कि हम वाहन चालकों तथा विद्यार्थियों की प्रति माह समीक्षा बैठक आयोजित करते हैं। वाहन चालकों के रचनात्मक मार्गदर्शन एवं सहयोग के लिए उन्हें राष्ट्रीय पर्वों पर होने वाले कार्यक्रमों में विशेष रूप से सम्मानित भी किया जाता है। विद्यालय के प्राचार्य टेकचंद मेहंदीरत्ता के अनुसार उक्त परियोजना छात्राओं के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। पहले वर्षभर अभिभावकों एवं छात्राओं की रास्ते में छेड़खानी की शिकायतें मिलती थी, किंतु अब छात्राएँ पूर्णतया सुरक्षित एवं खुश हैं। विद्यालय के छात्रावाहिनी चालक संघ के प्रधान विनोद कुमार का मानना है कि हम सभी चालक छात्राओं के अभिभावकों के रूप में सेवा दे रहे हैं, ताकि वे सुरक्षित माहौल में निश्चिंत होकर अच्छी पढ़ाई के साथ अपने सपने साकार कर सकें।

खंड शिक्षा अधिकारी डॉ. खुशीराम यादव का मानना है कि बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान के लिए यह परियोजना मील का पत्थर साबित होगी। जिला शिक्षा अधिकारी रामकुमार फलसवाल ने बताया कि रेवाड़ी जिले में इस योजना का सर्वाधिक लाभ उठाने वाला विद्यालय राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खोरी है। उन्होंने गत हरियाणा दिवस से ही इस योजना को लागू किया तथा निरंतर इसमें सुधार कर रहे हैं। उनका सुझाव है कि अधिक से अधिक विद्यालयों को अभिभावकों ग्राम पंचायतों तथा स्कूल प्रबंधन समितियों के रचनात्मक सहयोग से इस योजना का लाभ उठाना चाहिए ताकि आने वाले समय में यह योजना बेटियों की पढ़ाई से जुड़ी सभी विसंगतियों विद्रूपताओं को दूर कर सके।

प्राध्यापक रसायन शास्त्र
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, खोरी
रेवाड़ी

कल्चरल फेस्ट - म्हारी सभ्यता व संस्कृति का अनूठा संगम

प्रदीप मलिक

स्कूली छात्रों के लिए प्रतिभा निखारने का है बेहतर माध्यम।म्हारा हरियाणा, जित दूध दही का खाणा। देश में देश हरियाणा, जित सै सादा बाणा। बढ़ता हरियाणा - बदलता हरियाणा, विकसित हरियाणा - समृद्ध हरियाणा आदि कहावतों को चरितार्थ करने एवं अपने हरियाणा प्रदेश की सभ्यता व संस्कृति की छटा बिखरने के लिए शिक्षा विभाग हरियाणा ने 'कल्चरल फेस्ट' के माध्यम से छात्रों की प्रतिभा निखारने का बीड़ा उठाया है। किसी भी प्रदेश की सभ्यता व संस्कृति वहाँ की पहचान व धरोहर होती है। इसी मुहिम को मूर्त रूप दे रहा है म्हारा कल्चरल फेस्ट।

क्या है कल्चरल फेस्ट -

कल्चरल फेस्ट यानी सांस्कृतिक उत्सव, एक ऐसा कार्यक्रम जो हरियाणा प्रदेश की संस्कृति के संरक्षण को समर्पित है। इस कार्यक्रम की हर गतिविधि में हरियाणा प्रदेश की सभ्यता व संस्कृति की महक झलकती है। कल्चरल फेस्ट के माध्यम से हरियाणा शिक्षा विभाग अपने लोक गीत, हरियाणवी नृत्य, अपनी साँझी - अपनी संस्कृति, सामाजिक कुरीतियों पर कुठाराघात करते लघु नाटक आदि के माध्यम से स्कूली छात्र छात्राओं को प्रदेश की संस्कृति से जोड़ना चाहता है। ताकि हम प्रदेश के कल्चर को संजोकर रख सकें।

कल्चरल फेस्ट की कब हुई शुरुआत -

विगत वर्ष 2017-18 से शिक्षा विभाग हरियाणा ने सरकारी विद्यालय, आरोही विद्यालय व कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालयों में शिक्षा ले रहे छात्रों की प्रतिभा को निखारने के लिए कल्चरल फेस्ट की शुरुआत की है। इसके माध्यम से स्कूली बच्चे दो स्तर पर भाग लेते हैं। प्रथम स्तर कक्षा पाँचवीं से आठवीं व दूसरा स्तर कक्षा नौवीं से बारहवीं रखा गया है। दोनों स्तर पर शिक्षा विभाग द्वारा खंड स्तर से लेकर राज्य स्तर तक पुरस्कार राशि का प्रावधान किया जिससे छात्रों को प्रोत्साहित किया जा सके।

हर तरफ नजर आता है मनमोहक नजारा -

बात अगर कल्चरल फेस्ट की हो तो कहा जाता है कि इसमें हर तरफ मनमोहक नजारा देखने को मिलता है। एक ओर जहाँ सरकारी विद्यालयों में शिक्षा ले रहे बच्चे हरियाणवी परिधानों में सजे व महकते नजर आते हैं, वहीं दूसरी ओर प्रदेश की संस्कृति की महक से रू-ब-रू होने का अवसर मिलता है। म्हारे हरियाणा का परिधान घाघरा, कुर्ता, धोती, खण्डका, रंग-बिरंगे चूंदड़, कंठी, गलसरी, झालरा, बोरला, पाजेब, तागड़ी आदि जो विलुप्त होते नजर आती थे आज उन्हें दोबारा पहनना बच्चों के लिए गर्व की अनुभूति का आभास है। छात्राएँ हरियाणवी परिधान में परी

जैसी दिखती हैं। उनके चमकते चेहरे व निश्छल मुस्कान इस बात की परिचायक हैं कि वे सांस्कृतिक उत्सव के माध्यम से अपनी प्रतिभा को तराश रही हैं।

हरियाणवी गीतों पर नृत्य करते हुए झूमते हैं बच्चे -

सांस्कृतिक उत्सव के माध्यम से एक ओर जहाँ हरियाणवी गीतों की बहार सुनने का मौका मिलता है, वहीं दूसरी ओर हरियाणवी नृत्य पर छात्र-छात्राएँ थिरकते नजर आते हैं। मेरा दामन सिमा दे ओ ओ ननदी के बीरा, तन्ने न्यूह तन्ने न्यूह ढूंगे पे राखूँ ओ ओ ननदी के बीरा। पहलम तै पीया धामण सिमा दे, फेर जाइयो ओ जाइयो ओ पलटन में। दिल्ली शहर में बिके चुनरिया ओ बालमा, ओ साजना मेरी लायदे चुनरिया। मेरा नौ डांडी का बीजणा, मेरे सुसरे ने दिया घड़वा ए झणा झणा बाजे बीजणा। सुसरा जी ल्यादे ऊँटनी, मन्ने धार काढनी आवें सै, ल्यादे ऊँटनी, अपने सुसरे के आगे बहूवड़ कूकर चालै गी, मैं तो गज का घूँघट काढ़ मटक के चालूँगी, ए झटक के चालूँगी आदि हरियाणवी गीतों पर नाचते हुए हमें अपने प्रदेश की संस्कृति से ओतप्रोत होने का मौका मिलता है।

साँझी बनाओ प्रतियोगिता के माध्यम से अपने रीति-रिवाजों को जानने का मिलता है मौका -

सांस्कृतिक उत्सव में एक और विधा को शामिल किया गया है जिसे साँझी बनाओ का नाम दिया गया है। गोबर, मिट्टी के सितारों से सुसज्जित होने वाली साँझी को श्राद्ध की अमावस्या को डाला जाता है, जो देवी का रूप मानी जाती है। यह हमारे ग्रामीण आँचल की धरोहर के रूप में होती है। साँझी घर की सुख, समृद्धि व खुशहाली के साथ साथ बेटियों के सम्मान के लिए बनाई जाती है। साँझी के चारों ओर दीप जलाकर बड़ी लड़कियाँ पारंपरिक गीत गाती हैं, जिस पर घर की बुजुर्ग महिलाएँ उन्हें सम्मान देती हैं। साँझी को डालने के दस दिन बाद दशहरा के पर्व पर दीवार पर बनाई गई साँझी को तोड़कर उसके मुख को मिट्टी के बर्तन में रखकर लड़कियाँ उसे तालाब में बहा देती हैं। गाँव के युवा बच्चे उन्हें बीच तालाब रास्ते में रोकने का प्रयास भी करते हैं ताकि वो दूसरे सिरे पर न जा सकें। प्रदेश की सभ्यता व संस्कृति की ये पहल आज विलुप्त होती जा रही है। इसी को मद्देनजर रखते हुए शिक्षा विभाग हरियाणा ने साँझी बनाओ प्रतियोगिता के जरिये प्रदेश के रीति-रिवाजों को बचाने का सफल प्रयास किया है।

ये है पुरस्कार का प्रावधान-

निदेशालय शिक्षा विभाग हरियाणा द्वारा कल्चरल फेस्ट के माध्यम से जहाँ छात्रों की प्रतिभा को तराशना मुख्य उद्देश्य है, वहीं दूसरी ओर उन्हें उचित प्लेटफॉर्म के माध्यम से पुरस्कृत किया जाता है। शिक्षा विभाग हरियाणा द्वारा खंड स्तरीय कल्चरल फेस्ट में व्यक्तिगत विधा एकल नृत्य, रागनी व साँझी प्रतियोगिता में 500 रुपए प्रथम, 300 रुपए द्वितीय व 200 रुपए तृतीय पुरस्कार दिया जाता है। खंड स्तर पर समूह विधा समूह नृत्य, समूह गायन, लघु नाटिका में 2000 रुपए प्रथम, 1600 रुपए द्वितीय, 800 रुपए तृतीय पुरस्कार दिया जाता है। इसके साथ ही जिला स्तर पर सांस्कृतिक उत्सव में समूह प्रतियोगिताओं- समूह नृत्य, समूह गायन व लघु नाटिका / स्किट में 8000 रुपए प्रथम, 6000 रुपए द्वितीय, 4000 रुपए तृतीय व 500 रुपए सांत्वना पुरस्कार दिया जाता है। एकल नृत्य, रागनी व साँझी प्रतियोगिता में 3100 रुपए प्रथम, 2100 रुपए द्वितीय, 1500 रुपए तृतीय व 500 रुपए सांत्वना पुरस्कार दिया जाना है।

कल्चरल फेस्ट भविष्य के युवा कलाकारों को तैयार करता है

कल्चरल फेस्ट की राज्य कोर्डिनेटर व शैक्षणिक शाखा में कार्यक्रम अधिकारी डॉ. पूनम अहलावत ने बताया कि कल्चरल फेस्ट से प्रदेश की सभ्यता व संस्कृति को संरक्षण मिल रहा है। इसके माध्यम से विभिन्न विधाओं में बच्चे प्रतिभागिता करके अपनी कला में पारंगत हो रहे हैं, जिससे हरियाणा प्रदेश को आने वाले समय में लोक कलाकार भी मिलेंगे। शिक्षा विभाग हरियाणा की इस अनूठी व प्रभावी पहल से जहाँ बच्चों को खुलकर अपनी प्रतिभा दर्शाने का मंच मिल रहा है, वहीं यहीं से बच्चों को महाविद्यालय स्तर पर यूथ फेस्टिवल जैसे कार्यक्रमों के लिए आधार मिल रहा है। उन्होंने बताया कि कल्चरल फेस्ट की सफलता इस बात से है कि इसमें इस वर्ष पिछले वर्ष की बजाय और ज्यादा प्रतिभागी टीमें भाग ले रही हैं।

शिक्षा के साथ संस्कृति का मेल है कल्चरल फेस्ट -

सहायक निदेशक नन्द किशोर वर्मा का मानना है कि हरियाणा शिक्षा विभाग द्वारा कल्चरल फेस्ट के माध्यम से सरकारी स्कूलों में शिक्षा ग्रहण कर रहे बच्चों की छिपी हुई प्रतिभा को निखारने का बेहतर माध्यम है। स्कूल स्तर से लेकर राज्य स्तर पर प्रतिभागिता करने से छात्रों में टीम भावना, आपसी समझ, तालमेल व आगे बढ़ने की स्वच्छ प्रतिस्पर्धा का भाव बढ़ता है। सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के मनोबल को बढ़ाने में कल्चरल फेस्ट सहायक है। बच्चों द्वारा बड़े खुश मन से इन प्रतियोगिताओं में भाग लेना इस बात का परिचायक है कि शिक्षा विभाग की ये पहल बहुत कारगर साबित हुई है। बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामनाएँ।

कला अध्यापक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
इसराना, पानीपत

नन्हे वैज्ञानिकों के दिलों पर अनूठी छाप छोड़ गई विज्ञान शैक्षणिक यात्रा

सत्यवीर नाहड़िया

जीवन खुद एक यात्रा है, जिसमें हम निरंतर सीखते रहते हैं। सीखने की यह ललक हमें आजीवन विद्यार्थी बनाए रखती है। विद्यार्थी जीवन में शैक्षणिक की यात्राओं का विशेष महत्त्व होता है। विद्यार्थी जितना स्कूली माहौल में वर्षभर में नहीं सीख पाता, उतना वह केवल एक छोटी-सी शैक्षणिक यात्रा से सीख लेता है। ऐसी ही एक रोचक ज्ञानवर्धक शैक्षणिक यात्रा पिछले दिनों प्रदेश सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों के लिए आयोजित की गई, जिसके प्रथम चरण में हरियाणा के 7 जिलों के करीब 700 विद्यार्थियों ने इस विज्ञान शैक्षणिक यात्रा का भरपूर लाभ उठाया गत। 9 सितंबर से 19 सितंबर तक गुरुग्राम, मेवात, पलवल, फरीदाबाद, रेवाड़ी, महेंद्रगढ़ तथा भिवानी के संबंधित छात्र-छात्राएँ उक्त चार दिवसीय यात्रा के दौरान विज्ञान, कला, संस्कृति तथा देशप्रेम से जुड़े संबंधित स्थलों भ्रमण करके रोचक जानकारी के साथ आनंदित हुए। इन

पंक्तियों के लेखक को उक्त चार दिवसीय यात्रा पर रेवाड़ी की प्रतिनिधि टीम के साथ जाने का अवसर प्राप्त हुआ।

यह विज्ञान शिक्षण की यात्रा 11 वीं विज्ञान संकाय में अध्ययनरत मेधावी छात्र-छात्राओं के लिए आयोजित की गई। मेरिट के आधार पर चयनित हर जिले के 100 विद्यार्थियों तथा 10 प्रभारियों की प्रतिनिधि टीम ने उक्त यात्रा के दौरान सबसे पहले कपूरथला स्थित पुष्पा गुजराल साइंस सिटी का भ्रमण किया। पूर्व प्रधानमंत्री इंद्र कुमार गुजराल की माता जी के नाम पर स्थापित उक्त साइंस सिटी 72 एकड़ के लंबे चौड़े भूभाग पर स्थित है। करीब 100 करोड़ रुपये की लागत से बनाई गई इस साइंस सिटी में विज्ञान के बहुआयामी पक्षों को बेहद रोचक एवं नवाचारी अंदाज से प्रदर्शित किया गया। डायनासोर पार्क, मानव शरीर संरचना, पक्षी विहार, ऊर्जा पार्क, थ्री डी फिल्में, जैव संपदा एवं विविधता, अंतरिक्ष के रहस्य, चंद्रयान अभियान, खेलों में विज्ञान, क्लाइमेट चेंज, भूकंप प्रक्रिया तथा दैनिक जीवन में विज्ञान से जुड़ी गतिविधियों का बहुआयामी उल्लेख साइंस सिटी में बड़ी रोचकता एवं सरलता से समझाया गया है। यहाँ विद्यार्थियों ने विभिन्न वैज्ञानिक पक्षों के अलावा विज्ञान एवं अंतरिक्ष से जुड़ी अनेक फिल्मों का लुत्फ उठाया, जिनमें एवरेस्ट नामक फिल्म ने नन्हे वैज्ञानिकों को भावविभोर कर

दिया। साइंस सिटी में चारों ओर फैली हरियाली, ठहरने का बेहतरीन प्रबंधन, बेहद स्वादिष्ट भोजन, गाइड द्वारा सभी प्रकल्पों को सुरुचिपूर्ण ढंग से समझाना, सुरक्षा का उचित प्रबंधन, सभी प्रयोगशालाओं सेमिनार सभागारों तथा ऑडिटोरियम का प्रशंसनीय रखरखाव इस यात्रा को यादगार बनाए रखता है।

यात्रा का अगला पड़ाव अमृतसर रहा, जहाँ स्वर्ण मंदिर व जालियाँवाले बाग के धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्व के अलावा सूर्यास्त के समय भारत-पाकिस्तान के अटारी बाघा बॉर्डर पर होने वाली रिट्रीट सेरेमनी आकर्षण का केंद्र रही। दोनों देशों द्वारा अपने-अपने राष्ट्रध्वजों को सम्मान के साथ उतारने की यह परंपरा दर्शकों की अपार भीड़ के चलते बेहद रोमांचक एवं जोशीला रूप धारण करती जा रही है। सीमा सुरक्षा बल की देखरेख में होने वाली यह रस्म देशभक्ति के गीतों, नारों तथा परेड़ के चलते राष्ट्रीयता एवं देश प्रेम से सराबोर कर देती है।

इस यात्रा का अगला पड़ाव सिटी ब्यूटीफुल चंडीगढ़ था, जहाँ डेढ़ हजार से ज्यादा गुलाब की प्रजातियों से महकता रोज गार्डन, प्रख्यात शिल्पकार नेकचंद सैनी द्वारा निर्मित रॉक गार्डन, कला एवं संस्कृति का केंद्र आर्ट गैलरी व म्यूजियम तथा लंबी चौड़ी मनोहारी सुखना झील का भ्रमण विद्यार्थियों को बेहद भाया। इस भ्रमण का एक और अच्छा पहलू यह था कि विभाग द्वारा उक्त सभी स्थानों पर पहले से ही भोजन एवं ठहराव का बेहतरीन प्रबंधन कर रखा था तथा अपने प्रारूप के मुताबिक उपरोक्त सभी जिले बारी-बारी संबंधित स्थानों पर ठहराव के बाद अपने

गंतव्य की ओर कूच कर जाते थे, जिसके चलते विद्यार्थियों एवं प्रभारियों का प्रतिनिधिमंडल भ्रमण पर ही केंद्रित था तथा सभी ने इसका भरपूर आनंद उठाया। रेवाड़ी का प्रतिनिधिमंडल चंडीगढ़ से लौटते वक्त कुरुक्षेत्र भोजन के लिए रुका तथा ब्रह्मसरोवर का भ्रमण भी किया।

रेवाड़ी के जिला शिक्षा अधिकारी रामकुमार फलसवाल के प्रेरक निर्देशन,जिला विज्ञान विशेषज्ञ चंद्रप्रकाश जिला गणित विशेषज्ञ अशोक नामवाल के संजीदा संयोजन तथा प्राध्यापक रमेश चंद्र, रविंद्र प्रकाश, मंगत सिंह, स्नेह लता, अर्चना राव, पुष्पा यादव तथा धर्मबाई के कुशल

था टूर बड़ा प्यारा... यह टूर बड़ा प्यारा...!
धर्म-ध्यान, विज्ञान-कला संग देशप्रेम न्यारा!!

साइंस सिटी कपूरथला की, आई पहली बारी।
कण कण में विज्ञान बसा था, अद्भुत दुनिया न्यारी।
एवरेस्ट मूवी थी प्यारी, दूरबीन अरु तारा!
था टूर बड़ा प्यारा... ये टूर बड़ा प्यारा...!!

सोने का मंदिर अमृतसर, देख चुका हर माथा।
जलियाँवाला बाग बगल में, गाए गौरव गाथा।
तन मन था बाघा पर गाता, गूँजा जयकारा!
था टूर बड़ा प्यारा... ये टूर बड़ा प्यारा...!!

चंडीगढ़ के चौक मनोहर, न्यारी साफ-सफाई ।
रोज-गार्डन, रॉक- गार्डन, सुखना की अँगड़ाई ।
हरियाली हर मन को भायी,भाया उजियारा!
था टूर बड़ा प्यारा... ये टूर बड़ा प्यारा !!

सभी बड़ों ने टीमवर्क से, सारे फर्ज निभाए।
छोटों ने हर कहना माना, खड़े समय पर पाए।
सुनो नाहड़िया गीत सुनाए, तन-मन इकतारा!
था टूर बड़ा प्यारा, ये टूर बड़ा प्यारा!!

संयोजन में यह यात्रा बेहद यादगार रही। यात्रा में सभी विद्यार्थियों के अनुभव एवं संस्मरण रिकॉर्ड किया जाना, प्रतिदिन उनकी विभिन्न प्रकार की रोचक प्रतियोगिताएँ आयोजित करवाना, हर भ्रमण स्थल पर जाने से पहले उससे जुड़ी तमाम ऐतिहासिक एवं अधिकारिक जानकारियाँ मुहैया कराना, भ्रमण के दौरान बड़े समूह को छोटे-छोटे समूहों में बाँटना, सभी आठ समूह में से तीन सर्वश्रेष्ठ समूह निकालने की प्रारंभिक जानकारी देना, यात्रा का एक व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर सभी सूचनाओं एवं छायाचित्रों का आदान प्रदान करना, प्रतिदिन देर शाम सभी प्रभारियों का समीक्षात्मक बैठक में शामिल होकर अगले दिन की रणनीति तैयार करना, दैनिक सांस्कृतिक संध्या का आयोजन करना, उच्च अधिकारियों को भ्रमण का सचित्र दैनिक विवरण भेजना, भ्रमण, भोजन आदि के दौरान धैर्य पूर्वक पंक्ति बद्ध होना, फर्स्ट एड बॉक्स का समय अनुसार सदुपयोग करना, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक तथा राष्ट्रीयता के अनमोल नम लम्हों को कैमरे में कैद करते रहना जैसे बहुआयामी पक्षों के संदर्भ में सभी प्रभारियों की एकरूपता, दूरदृष्टि एवं टीमवर्क प्रेरक रहा। अपने गृह जिला पहुँचकर सभी विद्यार्थियों, खासकर छात्राओं को उनके अभिभावकों को सौंपते भी एक सुखद अनुभूति हो रही थी ।

प्राध्यापक, रसायन शास्त्र
राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,
खोरी, जिला- रेवाड़ी

रचनात्मकता को बढ़ाने में शिक्षकों की अहम भूमिका

किसी भी परिस्थिति अथवा समस्या को नए दृष्टिकोण अथवा लीक से हटकर देख समझकर उसका समाधान प्रस्तुत करने को रचनात्मक सोच कहा जाता है। प्रत्येक शिक्षक का यह कर्तव्य है कि वह बालक में रचनात्मक/सृजनात्मक सोच के विकास हेतु पर्याप्त अवसर प्रदान करे। यह उनके लिए अनेक प्रकार से लाभप्रद होगा। जैसे :

वे विचारों तथा वस्तुओं का नवोन्मेष कर पायेंगे।

वे नये एवं मौलिक सुझाव दे पायेंगे।

वे रचनात्मक तरीके से समस्या का समाधान खोज पायेंगे।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के मार्गदर्शक सिद्धान्त प्रस्तावित करते हैं कि पढ़ाई को रटंत प्रणाली से मुक्त किया जाना चाहिए। विद्यालयों में शिक्षण-अधिगम एवं आकलन के दौरान यदि हम बालकों की मौलिक सोच का दमन करके उन्हें मात्र पाठ्यपुस्तकों में प्रस्तावित अथवा बड़ों की सोच पर आधारित मानदण्डों के अनुसार सोचने, समझने व निष्कर्ष निकालने पर मजबूर करते रहेंगे तो हम उनके सृजनात्मकता के विकास का मार्ग अवरुद्ध कर देंगे तथा शिक्षण-अधिगम को रटंत-प्रणाली आधारित ही बनाए रखेंगे। यह बालकों के सर्वांगीण विकास एवं राष्ट्रहित में चिंतिनशील नागरिकों के संवर्धन में बाधक होगा। अतः विषय परिवेश अध्ययन में हमें इस बात का विशेष ध्यान रखना है कि किसी भी अधिगम बिन्दु पर हम बालकों को ध्यान केंद्रित करके चिंतन करने, हर पहलू से उस पर विचार करने एवं पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर सोचने-समझने व निर्णय लेने के लिए प्रेरित करें।

डॉ. एडवर्ड डी बोनो के अनुसार 'पढ़ाई में होशियार होना तथा अच्छा विचारक होना दो बिलकुल अलग बात है। बहुत होशियार बालक सम्भव है कि अच्छा विचारक न हो तथा बहुत अच्छा विचारक सम्भव है कि कक्षा में बहुत होशियार बालकों की श्रेणी मे न आता हो।' अतः बच्चों में रचनात्मकता के विकास हेतु उनमें चिंतनशीलता के कौशल का विकास किया जाना आवश्यक है। 'रचनात्मक तरीके से सोचना' सीखने के कुछ तरीके इस प्रकार हैं -

1. विकल्पों के विचार को लागू करना -

सोचने के इस तरीके को अपनाकर बच्चे केवल परंपरागत विकल्प का चयन न करके नवोन्मेष द्वारा, नये विकल्पों व संभावनाओं के बारे मे सोचते हैं तथा सभी विकल्पों का उचित विश्लेषण करने के बाद ही किसी समस्या का बेहतरीन समाधान सुझाते हैं। इस तरीके से उत्तम चिंतन प्रक्रिया के द्वारा बच्चों का मानसिक विकास भी होता है।

उदाहरण

स्कूल में बच्चे बाहर मैदान में खेले जाने वाला खेल खेलना चाहते थे किन्तु तेज बारिश होने के कारण वे बाहर नहीं खेल पा रहे थे। अध्यापिका ने उन्हें कक्षा के भीतर खेले जाने वाले सभी खेलों पर विचार करके सबसे उपयुक्त एक खेल चुनने को कहा। बच्चों ने सभी पहलुओं पर विचार करके कक्षा के भीतर खेले जाने वाला एक खेल चुना व उसे खेलकर आनन्द उठाया। इस प्रकार चिंतनशीलता से उन्होंने अनेक विकल्पों पर विचार करके समस्या का समाधान खोजा।

2. एकाग्रचित होकर चिंतन करना -

किसी भी समस्या का हल ढूँढने के लिए उस पर

एकाग्रचित होकर चिंतन करना आवश्यक है। इसके लिए बालकों को कृत्रिम परिस्थितियों में किसी समस्या के बारे में चर्चा करना, सोचना व हल ढूँढने हेतु उपाय सुझाने के तरीकों का अभ्यास करवाया जा सकता है। कक्षा में संचालित किसी भी गतिविधि में अपेक्षित परिणाम प्राप्त करने के लिए एकाग्रचित होकर चिंतन करना आवश्यक है।

उदाहरण

स्कूल में विज्ञान की प्रयोगशाला में कुछ बच्चे प्रयोग कर रहे थे। बार-बार प्रयोग करने पर भी उन्हें वांछित परिणाम नहीं मिल पा रहे थे। ऐसी स्थिति में जब उन्होंने शान्त व एकाग्र होकर सटीकता से प्रयोग किया तो उन्हें शीघ्र ही वांछित परिणाम प्राप्त हुए।

एकाग्रचित होकर ध्यान केन्द्रित करने के उपाय-

प्रायः कम आयु के बालकों में टिककर बैठने, एकाग्रचित होकर सुनने, समझने व काम करने की प्रवृत्ति बड़ों की अपेक्षा कम पाई जाती है। इसके लिए उन्हें कक्षा में कुछ गतिविधियाँ तथा व्यायाम करवाए जा सकते हैं।

उदाहरण

अचल बैठक एक स्थिति में ध्यान लगाना, सीधे बैठकर एक हाथ में पैन पकड़कर उसे सीधा करना तथा उस ध्यान केन्द्रित करना, काल्पनिक स्थिति में सितारे, गेंदें आदि वस्तुओं की निश्चित आकार में गणना करना आदि।

3. समस्या को चुनौती रूप में देखना

बालकों को प्रत्येक समस्या को चुनौती के रूप में देखना सिखाएँ। उन्हें सकारात्मक सोच व आत्मविश्वास के बल पर समस्या का हल ढूँढने के लिए प्रेरित करें तथा समाधान बताने पर प्रशंसा व तालियों द्वारा उनका उत्साहवर्धन करें। इस प्रकार नवीन व अनूठे विचारों को प्रस्तुत करने हेतु बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ेगा।

4. समावेशी चिंतन -

किसी भी परिस्थिति अथवा समस्या के बारे में उसके तथ्य, सकारात्मक व नकारात्मक पहलु, रचनात्मकता, परिणाम आदि सभी दृष्टिकोण से विचारकर लिए गए निष्कर्ष की सफलता की संभावना अधिक होती है। इसके लिए मात्र पाठ्यपुस्तक में सीमित ज्ञान व अधिगम विधाओं तक ही अपने को सीमित न रखें अपितु मुख्य अधिगम बिंदु से जुड़े सभी आयामों पर चिंतन करें।

उदाहरण

प्रश्न- माता-पिता के आर्थिक संकट-ग्रस्त होने पर बालकों को उनके काम में सहारा बनना चाहिए अथवा अपनी पढ़ाई पूरी करनी चाहिए? घर व मकान में अंतर बताओ।

5. कल्पनाशीलता एवं मौलिकता

बालकों से उनके परिवेश के विषय में चर्चा करते समय उन्हें कल्पनाशक्ति का प्रयोग करने के समुचित अवसर दें। अपनी सोच व कल्पना के आधार पर वे बेहद अनूठे एवं मौलिक विचार प्रस्तुत करते हैं। इसके लिए उन्हें प्रोत्साहित करें। एक विषय पर सभी बालकों के एक ही प्रकार के रूढिवादी उत्तर की अपेक्षा न करें। ऐसा करके हम बालकों को चिंतनशील बनने में मदद कर सकते हैं। इससे वे अपने आगामी जीवन में आने वाली चुनौतियों का हल ढूँढने में सक्षम बन पाएँगे।

उदाहरण

प्रश्न- यदि तुम्हारे गाँव में बाढ़ आ जाए तो तुम कौन-सी पाँच वस्तुओं को अति आवश्यक समझकर अपने साथ ले जाओगे?

तर्क आधारित परंपरागत विचार, विश्व को कुछ नया नहीं दे पाएँगे। एल्बर्ट, आइनस्टाइन ने लिखा है -"Logic will take you from A to B. Imagination will take you everywhere" विश्व की सभी खोज, परिवर्तन एवं विकासक्रम मनुष्य की रचनात्मक सोच के परिणाम हैं। कहा भी गया है- 'वही लोग दुनिया में कमाल करते हैं, जो औरों से हटकर, कुछ अलहदा ख्याल करते हैं।'

डॉ. दीप्ता शर्मा
विषय विशेषज्ञ
एससीईआरटी हरियाणा
गुरुग्राम

किशोरावस्था शिक्षा जरूरी क्यों ?

किशोरावस्था शब्द अंग्रेजी भाषा के Adolescence शब्द का हिंदी पर्याय है। Adolescence शब्द का उद्भव लेटिन भाषा से माना गया है जिसका सामान्य अर्थ है बढ़ना या विकसित होना। बाल्यावस्था से प्रौढ़ावस्था तक के महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों जैसे शारीरिक, मानसिक एवं अल्पबौद्धिक परिवर्तनों की अवस्था किशोरावस्था है। वस्तुतः किशोरावस्था यौवानारम्भ से परिपक्वता तक वृद्धि एवं विकास का काल है। 10 वर्ष की आयु से 19 वर्ष तक की आयु के इस काल में शारीरिक तथा भावनात्मक स्वरुप से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आते हैं। कुछ मनोवैज्ञानिक इसे 13 से 18 वर्ष के बीच की अवधि मानते हैं, जबकि कुछ की यह धारणा है कि यह अवस्था 24 वर्ष तक रहती है।

लेकिन किशोरावस्था को निश्चित अवधि की सीमा में नहीं बाँधा जा सकता। यह अवधि तीव्र गति से होने वाले शारीरिक परिवर्तनों विशेषतया यौन विकास से प्रारंभ हो कर प्रजनन परिपक्वता तक की अवधि है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार यह गौण यौन लक्षणों (यौवानारम्भ) के प्रकट होने से लेकर यौन एवं प्रजनन परिपक्वता की ओर अग्रसर होने का समय है जब व्यक्ति मानसिक रूप से प्रौढ़ता की ओर अग्रसर होता है और वह सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से अपेक्षाकृत आत्मनिर्भर हो जाता है जिससे समाज में अपनी एक अलग पहचान बनती है।

किशोरावस्था तीव्र शारीरिक भावनात्मक और व्यवहार सम्बन्धी परिवर्तनों का काल है। यह परिवर्तन शरीर में उत्पन्न होने वाले कुछ हारमोंस के कारण आते हैं जिनके परिणाम स्वरुप कुछ एक ग्रंथियाँ एकाएक सक्रिय हो जाती है। ये सब परिवर्तन यौन विकास के साथ सीधे जुड़े हुए हैं क्योंकि इस अवधि में गौण यौन लक्षणों के साथ-साथ बहुत महत्त्वपूर्ण शारीरिक परिवर्तन होते हैं। किशोर बात-बात में अपनी अलग पहचान का आग्रह करते हैं और एक बच्चे की तरह माता-पिता पर निर्भर रहने की उपेक्षा एक प्रौढ़ की तरह स्वतंत्र रहना चाहते हैं। वे अपने माता-पिता से थोड़ा दूरी बनाना शुरू कर देते हैं और अपने सम-आयु समूह (Pear Group) में ही अधिकतर समय व्यतीत करने लगते हैं। यौन-उर्जस्विता के कारण वे विपरीत लिंग की ओर आकर्षित होते हैं। इस प्रकार किशोरावस्था का मानव जीवन में एक विशिष्ट स्थान है।

किशोरावस्था की समस्याएँ-

किशोरावस्था एक ऐसी संवेदनशील अवधि है जब व्यक्तित्व में बहुत महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आते हैं। वे परिवर्तन इतने आकस्मिक और तीव्र होते हैं कि उनसे कई समस्याओं का जन्म होता है। यद्यपि किशोर इन परिवर्तनों को अनुभव तो करते हैं पर वे प्रायः इन्हें समझने में असमर्थ होते हैं। अभी तक उनके पास कोई ऐसा स्रोत उपलब्ध नहीं है जिसके माध्यम से वे इन परिवर्तनों के विषय में वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त कर सकें। किन्तु उन्हें इन परिवर्तनों और विकास के बारे में जानकारी चाहिए, इसलिये वे इसके लिए या तो सम-आयु समूह की मदद लेते हैं, या फिर गुमराह करने वाले सस्ते साहित्य पर निर्भर हो जाते हैं। गलत सूचनाएँ मिलने के कारण वे अक्सर कई भ्रांतियों का शिकार हो जाते हैं जिससे उनके व्यक्तित्व विकास पर कुप्रभाव पड़ता है।

किशोरों को इसलिये भी समस्याएँ आती हैं क्योंकि वे विपरीत लिंग के प्रति एकाएक जाग्रत रुचि को ठीक से समझ नहीं पाते। माँ-बाप से दूर हटने की प्रवृत्ति और सम-आयु समूह के साथ गहन मेल-मिलाप भी उनके मन में संशय और चिंता पैदा करता है। किन्तु परिजनों के उचित मार्गदर्शन के अभाव में उन्हें सम-आयु समूह की ही ओर उन्मुख होना पड़ता है। प्रायः देखा गया है कि किशोर सम-आयु समूह के दबाव के सामने विवश हो जाते हैं और उन में से कुछ तो बिना परिणामों को सोचे अनुचित कार्य करने पर मजबूर हो जाते हैं। कुछ सिगरेट, शराब, मादक द्रव्यों का सेवन करने लगते हैं और कुछ यौनाचार की ओर भी आकर्षित हो जाते हैं और इस सब के पीछे सम-आयु समूह का दबाव आदि कई कारण हो सकते हैं।

किशोरावस्था की प्रवृतियाँ एवं लक्षण

मानव विकास की चार अवस्थाएँ मानी गयी हैं बचपन, किशोरावस्था, युवावस्था और प्रौढ़ावस्था। यह विकास शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप में होता रहता है। किशोरावस्था सबसे अधिक परिवर्तनशील अवधि है। किशोरावस्था के निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण लक्षण इसकी अन्य अवस्थाओं से भिन्नता को प्रकट करते हैं-

क) शारीरिक परिवर्तन

किशोरावस्था में तीव्रता से शारीरिक विकास और मानसिक परिवर्तन होते हैं। विकास की प्रक्रिया के कारण अंगों में भी परिवर्तन आता है, जो व्यक्तिगत प्रजनन परिपक्वता को प्राप्त करते हैं। इनका सीधा सम्बन्ध यौन विकास से है।

ख) मनोवैज्ञानिक परिवर्तन

किशोरावस्था मानसिक, भौतिक और भावनात्मक परिपक्वता के विकास की भी अवस्था है। एक किशोर, छोटे बच्चे की तरह किसी दूसरे पर निर्भर रहने की अपेक्षा, प्रौढ़ व्यक्ति की तरह स्वतंत्र रहने की इच्छा प्रकट करता है। इस समय किशोर पहली बार तीव्र यौन इच्छा का अनुभव करता है, इसी कारण विपरीत लिंग के प्रति आकर्षित रहता है। इस अवस्था में किशोर मानसिक तनाव से ग्रस्त रहता है यह अवस्था अत्यंत संवेदनशील मानी गयी है।

ग) सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन

किशोरों में सामाजिक-सांस्कृतिक मेलजोल के

फलस्वरूप कुछ और परिवर्तन भी आते हैं। सामान्यतः समाज किशोरों की भूमिका को निश्चित रूप में परिभाषित नहीं करता। फलस्वरूप किशोर बाल्यावस्था और प्रौढावस्था के मध्य अपने को असमंजस की स्थिति में पाते हैं। उनकी मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को समाज द्वारा महत्व नहीं दिया जाता, इसी कारण उनमें क्रोध, तनाव एवं व्यग्रता की प्रवृत्तियाँ उत्पन्न होती हैं। किशोरावस्था में अन्य अवस्थाओं की अपेक्षा उत्तेजना एवं भावनात्मकता अधिक प्रबल होती है।

व्यावहारिक परिवर्तन

उपयुक्त परिवर्तनों के कारण किशोरों के व्यवहार में निम्न लक्षण उजागर होते हैं -

अ) स्वतन्त्रता

शारीरिक, मानसिक और सामाजिक परिपक्वता की प्रक्रिया से गुजरते हुए किशोरों में स्वतंत्र रहने की प्रवृत्ति जाग्रत होती है। जिससे वे अपने आप को प्रौढ़ समाज से दूर रखना प्रारंभ करते हैं। आधुनिक युग का किशोर अलग रूप से ही अपनी संस्कृति का निर्माण करना चाहता है जिसे उप-संस्कृति का नाम दिया जा सकता है। यह उप-संस्कृति धीरे-धीरे समाज में विद्यमान मूल संस्कृति को प्रभावित करती है।

ब) पहचान

किशोर हर स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाने केलिए संघर्ष करते हैं। वे अपनी पहचान बनाए रखने के लिए लिंग भेद तथा अपने को अन्य से उच्च एवं योग्य दर्शाने के प्रयास में होते हैं।

स) घनिष्ठता

किशोरावस्था के दौरान कुछ आधारभूत परिवर्तन होते हैं। ये परिवर्तन अधिकतर यौन संबंधों के क्षेत्र के होते हैं। किशोरों में अचानक विपरीत लिंग के प्रति रुचि उत्पन्न होती है। वे आकर्षण एवं प्रेम के मध्य अंतर स्पष्ट नहीं कर पाते और मात्र शारीरिक आनंद एवं संतुष्टि के लिए सदैव भटके रहते हैं।

समवय समूहों पर निर्भरता

अपनी पहचान व स्वतन्त्रता को बनाए रखने के लिए, किशोर अपने माता-पिता के भावनात्मक बंधनों को त्याग कर अपने मित्रों के साथ ही रहना पसंद करते हैं। परन्तु समाज लड़के-लड़कियों के स्वतन्त्र मेलजोल को स्वीकृत नहीं करता। किशोरों का प्रत्येक वर्ग अपने लिंग से सम्बंधित एक अलग समूह बनाकर अलग में रहना पसंद करता है। इस तरह की गतिविधियाँ उन्हें समवाय समूहों पर निर्भर रहने के लिए प्रोत्साहित करती है। यहीं से ही वे अपने परिवर्तित व्यवहार के प्रति समर्थन एवं स्वीकृति प्राप्त करते हैं।

बुद्धिमत्ता

बौद्धिक क्षमता का विकास भी किशोरों के व्यवहार से प्रदर्शित होता है। उनमें तथ्यों पर आधारित सोच-समझ

व तर्कशील निर्णय लेने की क्षमता उत्पन्न होती है। ये सभी कारण उनमें आत्मानुभूति का विकास करते हैं।

विकास की अवस्थाएँ

किशोरावस्था के तीन चरण हैं -

क) पूर्व किशोरावस्था

ख) मूल किशोरावस्था

ग) किशोरावस्था का अंतिम चरण

यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि विकास निर्धारित नियमानुसार ही नहीं होता इसी कारण तीनों चरण एक-दूसरे की सीमाओं का उल्लंघन करते हैं।

क) पूर्व किशोरावस्था

विकास की यह अवस्था किशोरावस्था का प्रारंभिक चरण है। पूर्व किशोरावस्था के इस चरण में शारीरिक विकास अचानक एवं झलकता है। यह परिवर्तन भिन्न किशोरों में भिन्न-भिन्न प्रकार से होता है। इस समय टांगों और भुजाओं की लम्बी हड्डियों का विकास तीव्रता से होता है। किशोर की लम्बाई ४ से ९ इंच तक प्रतिवर्ष बढ़ सकती है। लिंग-भेद के कारण लम्बाई अधिक बढ़ती है। इस समय किशोर तीव्र सामाजिक विकास और अपने में गतिशील यौन विकास का अनुभव करते हैं। वे अपने समवय समूहों में जाने की चेष्टा करते हैं। इस स्तर पर प्यारे दोस्तों का ही महत्त्व रह जाता है। किशोर अपने-अपने लिंग से सम्बंधित समूहों का निर्माण करते हैं। यौन सम्बंधित सोच एवं यौन प्रदर्शन इस स्तर पर प्रारंभ हो जाता है। कुछ अभिभावक इस सामान्य व्यवहार को स्वीकृत नहीं करते और किशोरों को दोषी ठहराते हैं। विकास के इस चरण में शारीरिक परिवर्तन से किशोर प्रायः घबरा जाते हैं। वे सामाजिक-सांस्कृतिक सीमाओं और यौन इच्छाओं के मध्य संतुलन बनाने का प्रयास करते हैं।

ख) मूल किशोरावस्था

किशोरावस्था का यह चरण शारीरिक, भावनात्मक और बौद्धिक क्षमताओं के विकास को दर्शाता है। इस चरण में यौन लक्षणों का विकास जारी रहता है तथा प्रजनन अंग, शुक्राणु उत्पन्न करने में सक्षम हो जाते हैं। इस समय किशोर अपने को अभिभावकों से दूर रखने का प्रयास करते हैं। वह प्रायः आदर्शवादी बनते हैं और यौन के विषय में जाने की उनकी रुचि निरंतर बढ़ती रहती है। किशोर के विकास का यह चरण प्रयोग और साहस से भरा होता है। प्रत्येक किशोर अपने से विपरीत लिंग और समवाय समूहों से सम्बन्ध रखना चाहता है। किशोर इस चरण में समाज में अपने अस्तित्व को जानना चाहता है और समाज को अपना योगदान देना चाहता है। किशोर की मानसिकता इस स्थिति में और अधिक जटिल बन जाती है। उसकी भावना गहरी और घनिष्ठ हो जाती है और उनमें निर्णय लेने की शक्ति उत्पन्न हो जाती है।

ग) किशोरावस्था का अंतिम चरण

किशोरावस्था के इस चरण में अप्रधान यौन लक्षण भली प्रकार से विकसित हो जाते हैं और यौन अंग प्रौढ़ कार्यकलाप में भी सक्षम हो जाते हैं। किशोर समाज में अपनी अलग पहचान और स्थान की आकांक्षा रखता है। उनकी यह पहचान बाहरी दुनिया के वास्तविक दृश्य से अलग ही होती है। इस समय उनका समवाय समूह कम महत्त्व रखता है क्योंकि अब मित्रों के चयन की प्रवृत्ति अधिक होती है।

किशोर इस समय अपने जीवन के लक्ष्य को समक्ष रखता है। हालांकि आर्थिक रूप से वह कई वर्षों तक अभिभावक पर ही निर्भर करता है। इस चरण में किशोर सही व गलत मूल्यों की पहचान करता है तथा उसके अन्दर नैतिकता इत्यादि भावनाओं का विकास होता है।

इस समय किशोर अपना भविष्य बनाने के अभिलाषी होते हैं। उपयुक्त कार्य के लिए वे अभिभावकों एवं समाज का समर्थन चाहते हैं ताकि उनके द्वारा कार्यों का सम्पादन हो।

किशोरावस्था शिक्षा जरूरी क्यों?

किशोरावस्था शिक्षा विद्यार्थियों के किशोरावस्था के बारे में जानकारी प्रदान करने की आवश्यकता के सन्दर्भ में उभरी एक नवीन शिक्षा का नाम है। किशोरावस्था जो कि बचपन और युवावस्था के बीच का परिवर्तन काल है, को मानवीय जीवन की एक पृथक अवस्था के रूप में मान्यता केवल बीसवीं शताब्दी के अंत में ही मिल पायी। हजारों सालों तक मानव विकास की केवल तीन अवस्थाएँ बचपन, युवावस्था और बुढ़ापा ही मानी जाती रही हैं। कृषि प्रधान व ग्रामीण संस्कृति वाले भारतीय व अन्य समाजों में यह धारणा है कि व्यक्ति बचपन से सीधा प्रौढ़ावस्था में प्रवेश करता है। अभी तक बच्चों को छोटी आयु में ही प्रौढ़ व्यक्तियों के उत्तरदायित्व को समझने और वहाँ करने पर बाध्य किया जाता रहा है। युवक प्रौढ़ पुरुषों के कामकाज में हाथ बँटाते रहे हैं और लड़कियाँ घर के। बाल विवाह की कुप्रथा तो बच्चों को यथाशीघ्र प्रौढ़ भूमिका में धकेल देती रही है। विवाह से पूर्व या विवाह होते ही बच्चों को यह जाने पर बाध्य किया जाता रहा है कि वे प्रौढ़ हो गए हैं।

लेकिन अब कई नवीन सामाजिक और आर्थिक धारणाओं की वजह से स्थिति में काफी परिवर्तन आ गया है। शिक्षा और रोजगार के बढ़ते हुए अवसरों के कारण विवाह करने की आयु भी बढ़ गयी है। ज्यादा से ज्यादा बच्चे घरों और कस्बों से बाहर निकल कर प्राथमिक स्तर से आगे शिक्षा प्राप्त करते हैं। उनमें से अधिकतर शिक्षा व रोजगार की खोज में शहरों की ओर पलायन कर जाते हैं। देश के अधिकतर भागों में बाल विवाह की घटनाएँ न्यूनतम स्तर पर पहुँच गयी है। लड़कियाँ भी बड़ी संख्या में शिक्षा ग्रहण कर रही हैं।

जिसके फलस्वरूप वे भी शीघ्र ही वैवाहिक बंधन में बँधना नहीं चाहतीं। इस मानसिक परिवर्तन में संचार माध्यमों की भी महती भूमिका रही है। एक ओर विवाह की आयु में वृद्धि हो गयी है और दूसरी ओर बच्चों में बेहतर स्वास्थ और पोषण सुविधाओं के कारण यौवानारम्भ निर्धारित आयु से पहले ही हो जाता है। इन परिवर्तनों के कारण बचपन और प्रौढावस्था में काफे अंतर पढ़ गया है। इस कारण अब व्यक्ति की आयु में एक ऐसी लम्बी अवधि आती है जब उसे न तो बच्चा समझा जाता है और न ही प्रौढ़ का दर्जा दिया जाता है। जीवन के इसी काल को किशोरावस्था कहते हैं।

किशोरावस्था का व्यवहार

किशोरावस्था में बच्चे बड़ों की तरह व्यवहार करना शुरू करने लगते है, उन्हें माता पिता की बात,उनकी दखलंदाज़ी अच्छी नहीं लगती। बाहर घूमना, बाहर का खाना, मित्रों के साथ बाहर रहना, स्कूल के बहाने घर से बाहर जाना इत्यादि बातें आम होती जा रहीं हैं। आजकल एक नया तरीका नेट का हो गया है, जिसमें बच्चे अपना समय गँवाते हैं। इसके पीछे शायद स्वयं माता पिता ही जिम्मेदार हैं। सबसे पहले हमें अपने बच्चों को समझना होगा, उनकी आदतें कहाँ से पड़ रही हैं। साथ ही हमें अपने बच्चों की कमियों को नज़रंदाज़ नहीं करनी चाहिए किन्तु साथ ही ये बात अवश्य ध्यान देनी होगी कि हम अपने बच्चों की शिकायत दूसरों से न करें, दूसरा आदमी आपका अपना नहीं है, वह आपके हटते ही आपका मज़ाक बनाएगा, आपकी कोई मदद नहीं करेगा और दूसरी तरफ आपका बच्चा आपका विश्वास खोता जायेगा किशोरावस्था के बच्चो का ध्यान बहुत रखना पड़ता है किन्तु उनसे मित्रवत व्यवहार करके आप स्वयं को उनके स्थान पर रख कर देखो कि आपने उस उम्र में क्या किया था फिर आप उनसे उम्मीदें लगायें। दूसरे के बच्चों की खूबियाँ अपने बच्चे में न ढूँढे अपने बच्चे की खूबियों को निखार कर लायें।

बच्चे वे फूल होते हैं जो कि जीवन के बगीचे में संवरते हैं फिर वो फूल गुलाब का हो या फिर सूरजमुखी सुंदर तो दोनों दिखते है तो फिर हम अपने बच्चे की तुलना दूसरे बच्चों से क्यों करें?

किशोरावस्था एक ऐसी अवस्था होती है जहाँ बच्चे न तो छोटे में गिने जाते हैं और न ही बड़े में। हमें सबसे पहले शुरू से अर्थात् बचपन से जब बच्चा घुटनों पर चलना सीखता है, तब से ही उसकी छोटी छोटी बातों पर ध्यान रखना चाहिए। बच्चा है तो जिद करेगा ही, किन्तु हमें संयम से ध्यान रखकर ही उसकी जिद को पूरा करनी चाहिए। क्योंकि आदत कि शुरुआत वहीं से होती है। फिर बच्चे के बड़े होने के साथ उन्हें जीवन के हर सही गलत की पहचान करवानी चाहिए। उन्हें जैसे वो बड़े हों तभी उन्हें अनुशासित जीवन का तरीका बताएँ, साथ ही स्वयं भी अनुशासन में रहें। यदि हम स्वयं अपने से बड़ों को जवाब देंगे तो बच्चा वही सीखेगा एवम बाद में पलट कर जवाब देगा जो कि हमें अच्छा नहीं लगता और हम शुरू हो जाते हैं कि बच्चे तो हमारी सुनते ही नहीं।

किशोरावस्था में प्रवेश के पहले ही हमें बच्चों दुनियादारी के बारे में धीरे-धीरे बताना चाहिए कि जीवन में क्या गलत होता है। उनका मस्तिष्क विकार होने से पूर्व ही हमें उनके मस्तिष्क का विकास करना चाहिए। यदि उनके मस्तिष्क में सकारात्मक सोच शुरू से बैठ गयी तो उनका जीवन दूसरों को भी रोशनी देगा। हमें उनकी भावनाओं को समझना चाहिए। किसी भी चीज़ का निवारण दंड नहीं होता। इसे हमेशा ध्यान में रखना चहिये कि किशोरावस्था नदी की तेज़ वेग की लहर के समान होती है जिसमें बहुत संयम के साथ तैरना पड़ता है। अंत में मैं यही कहूँगा कि बढ़ते बच्चों की जिम्मेदारी हम सभी की है जिसमें परिवार, विद्यालय, समाज, सभी जम्मेदारी लें तो बच्चे कभी भी अनुशासनहीन नहीं बन सकते।

साभार- **https://mindguruindia.com/teenage-depression/**

विलक्षण प्रतिभा की धनी है हिमांशी

हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग, पंचकूला द्वारा केरल के प्राकृतिक सुषमा से परिपूर्ण चेरथला में राष्ट्रीय स्तर के एडवेंचर कैम्प में छात्राएँ अपनी-अपनी प्रस्तुतियाँ दे रही थीं। उस दिन विशेष रूप से खास व अलग तरह का कार्यक्रम था। एक नृत्य केरल की छात्राओं का तथा एक नृत्य हरियाणा की छात्राओं का चल रहा था। कार्यक्रम इतना रोचक था कि केरल के सभी दर्शक खुद भी झूम रहे थे। थोड़ी देर में हरियाणा की नृत्य की बारी आई तो एक छात्रा स्टेज पर चढ़ी। वह हरियाणा की वेशभूषा में न होकर कन्नड़ी वेशभूषा में थी। जब नृत्य गीत आरम्भ हुआ तो उसने नृत्य भी कन्नड़ का ही शुरू कर दिया। हमें लग रहा था कि क्या ये दक्षिण का कोई लोक नृत्य अच्छे ढंग से कर सकेगी? किन्तु जैसे ही नृत्य शुरू हुआ इस छात्रा के कदमों, हाथ, अंगुलियों, सिर व पूरे बदन में जो गति, मस्ती व अनुशासन था कमाल का था। पूरा पंडाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। करीब आठ मिनट के नृत्य से इस छात्रा ने आकर्षक व सुन्दर नृत्य ही नहीं किया बल्कि अब तक किये गए सभी नृत्यों से भी आकर्षक था।

इसी बालिका ने दूसरा नृत्य मलयालम गीत पर किया तो हम और भी चौंक गए तथा सभी इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे। शरीर, अंगों की भाव-भंगिमाएँ, गर्दन का घुमाव, आँखों का तरेरना, हाथों की गति, पैरों की थिरकन कमाल की थी। अगले दिन इसी छात्रा ने हरियाणवी वेशभूषा में हरियाणवी नृत्य किया तो आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था कि ये वही लड़की है। हरियाणा के एक साधारण से सरकारी स्कूल में पढ़ने वाली सीधी, सरल सी दिखने वाली एक छात्रा। इस छात्रा का नाम है हिमांशी।

गुरुग्राम के कासन गाँव के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की नौंवीं कक्षा की छात्रा हिमांशी बहुमुखी प्रतिभाशाली छात्रा है। जो एक साथ कई क्षेत्रों में प्रशंसनीय कार्य कर रही है। जहाँ तक नृत्य की

बात है ये हरियाणवी, पंजाबी, राजस्थानी, हिमाचली, कश्मीरी, उत्तराखंडी के साथ-साथ दक्षिण के बहुत से नृत्य कुशलतापूर्वक कर लेती हैं। अनेक तरह के नृत्यों में निपुण हिमांशी ने बताया कि नृत्य का प्रशिक्षण नहीं लिया। वह मोबाइल में या टेलीविजन पर कोई भी नृत्य व उसकी बारीकियाँ ध्यान से देखती है तथा नृत्य सीख जाती है। कथक, भारतनाट्यन, मलयालम नृत्य में वह माहिर है। इसके साथ-साथ फिल्मी गीतों पर भी नृत्य करती है। हिमांशी के स्कूल में कोई संगीत शिक्षक नहीं है। फिर भी वह कमाल का नृत्य करती है, ये उसकी मेहनत, लगन व नृत्य में बेहद रुचि का ही परिणाम है। नृत्य ही नहीं बल्कि आवाज़ की जादूगरनी भी है। किसी भी गीत को इतने मधुर स्वर में कुशलता से व आत्मविश्वास से गाती है कि सुनने वाला वाह-वाह कर उठता है। हिमांशी के गीत गाने का अपना स्टाइल है। ये जुदाई के, मिलन के, खुशी के, मस्ती भरे गीतों के साथ-साथ देशभक्ति, समाज-उत्थान के गीत प्रभावी ढंग से गाती है।

हिमांशी अपने नृत्य व आवाज का जादू नेशनल एडवेंचर कैम्पों, कला उत्सवों, कल्चर फेस्ट, भारत स्काउट्स एण्ड गाइड्स के कार्यक्रमों में बिखेर चुकी है। उसे ढेर सारे पुरस्कार मिल चुके हैं। हिमांशी जहाँ पढ़ाई में अपनी कक्षा में सबसे आगे रहती है, वहीं पेंटिंग, मेहंदी, रंगोली, एक्टिंग, भाषण विधाओं में सराहनीय कार्य कर रही है तथा इनमें भी ये पुरस्कार जीतती रहती है। मेंहदी लगाना, पेंटिग करना इसे अच्छा लगता है। यात्राओं में इसकी खास रुचि है तथा प्रकृति प्रेमी स्वभाव की है। पेंटिंग में इसे पहाड़, नदियाँ, झरने, जंगल, पहाड़ी मकान, पशु-पक्षी बनाना अधिक भाता है। वैसे सामाजिक बुराइयों के खिलाफ भी ये पेंटिंग करती रहती है।

हिमांशी का लक्ष्य अच्छी डांसर, गायिका बनने के साथ जज बनने का है। इसका कहना है कि जज बनकर मैं लोगों के साथ इन्साफ करना चाहती हूँ। जज बनने के लिए जितनी मेहनत की आवश्यकता है, मैं उससे भी ज्यादा मेहनत करूँगी ताकि लक्ष्य पूरा हो सके। हिमांशी ने बताया कि मेरे पापा-मम्मी प्राइवेट कम्पनी में काम करते हैं। वह कहती है कि मैं सफल होकर अपने माता-पिता के सपने पूरा करना चाहती हूँ। वे मुझे बहुत प्यार करते हैं। मेरी हर इच्छा का ध्यान रखते हैं। बड़ी होकर मैं भी अपना कर्त्तव्य निभाना चाहती हूँ। हिमांशी ने बताया कि उसकी छोटी बहन दिव्यांशी भी अच्छी डांसर हैं। अच्छी कलाकार भी है। हिमांशी की लिखाई भी सुन्दर है। हिमांशी ने नृत्य, पेंटिंग, मेहंदी, नाटक, गायन के साथ-साथ क्विज़, श्लोक, वाद-विवाद, कैट वॉक व निबन्ध प्रतियोगिताओं में भी खण्ड, जिला व राज्य स्तरीय अनेक इनाम जीते हैं। बहुत बार ये प्रथम स्थान पर रही है। हिमांशी ने आत्मविश्वास से कहा कि मैं अपने माँ-बाप का, स्कूल का, गाँव, जिले का तथा हरियाणा का नाम ऊँचा करना चाहती हूँ। ।

- डॉ. ओमप्रकाश कादयान
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
एम.पी. रोही, फतेहाबाद

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

खेल-खेल में विज्ञान शृंखला में विद्यार्थियों को करवायी जा सकने वाली कुछ विज्ञान पाठ्यक्रम आधारित गतिविधियाँ प्रस्तुत हैं। इन गतिविधियों को करने से विद्यार्थी विज्ञान नियम सिद्धांतों संबंधित उपजी विभिन्न जटिलताओं का सरलीकरण कर सकेगा और उसको लाभ होगा।

1. मिट्टी द्वारा जल अन्त : स्रवण की दर ज्ञात करना-

कक्षा-7 के मृदा पाठ में एक बहुत ही रुचिकर गतिविधि है। बच्चे अक्सर पूछते हैं कि बारिश के बाद पानी कहाँ चला जाता है? बच्चों को बताया जाता है कि पानी का अधिकांश भाग मृदा अवशोषित कर लेती है और आवासीय व्यवस्था में पानी नालियों और सीवरेज से होता हुआ ढाल वाली जगह एकत्र हो या किसी नदी-नाले में चला जाता है। बच्चे हैरान थे कि क्या जमीन इतना पानी अवशोषित लेती है? यह समझने के लिए ही उन्हें मृदा पाठ में में आने वाली यह गतिविधि कराई गयी। बच्चों को यह बताना आवश्यक था कि पानी अलग-अलग जमीन कितनी दर से अवशोषित हो सकता है। इसके लिए एक 4 इंच व्यास का पीवीसी पाइप का एक टुकड़ा जो छात्र विकास अपने घर से लाया था। उसको जमीन में 2 सेंटीमीटर तक गाड़ दिया गया। फिर उसमें बीकर से माप कर 250 मिलीलीटर पानी डाला। घड़ी से आरम्भ का समय भी नोट कर लिया। विद्यार्थी ये देखकर हैरान थे कि मात्र 15 मिनट में पाइप का सारा पानी जमीन ने अवशोषित कर लिया। इन रीडिंग्स को सूत्र में रखा और हल किया तो उन्हें पता लगा कि उनके द्वारा चयनित जमीन 16.6 मिलीलीटर पानी प्रति मिनट अवशोषित कर रही है। विद्यार्थियों ने स्थान बदल-बदल कर प्रयोग को दोहराया।

2. आलू ऊपर कैसे चढ़ा?

यह भी एक बहुत मजेदार विज्ञान गतिविधि है जिसमें बच्चा विराम के जड़त्व यानी न्यूटन के गति के प्रथम नियम को समझता है। इस विवादित गतिविधि में बहुत अध्यापक न्यूटन का तृतीय नियम (क्रिया प्रतिक्रिया का नियम) भी प्रयुक्त हुआ बताते हैं, परंतु वास्तव में अधिकांश मत इसको विराम के जड़त्व की गतिविधि के लिए ही मिलते हैं। स्वेटर बुनने वाली एक सिलाई में एक आलू को पिरो लेते हैं। सिलाई का एक तिहाई भाग को नीचे मुट्ठी में कसकर पकड़ लेते हैं। सिलाई के ऊपरी हिस्से पर एक हथौड़ी से बार-बार चोट मारते हैं। यानी सिलाई पर बल लगाते हैं तो हम देखते हैं कि हर बार चोट (बल) मारने पर आलू ऊपर चढ़ता जाता है। बच्चों ने

यह गतिविधि बार-बार कर के देखी। हथौड़ी की चोट से सीधा बल सलाई पर आरोपित हुआ आलू पर नही। सिलाई बार-बार नीचे गई परंतु आलू अपने स्थान पर ही रहा। सलाई नीचे जाती रही। इसलिए आलू ऊपर चढ़ता गया।

3. घूमने वाला धागा

दो स्ट्रॉ लेते हैं। एक स्ट्रॉ के बीच में एक कट लगाकर दूसरे स्ट्रा से आधे टुकड़े को उस कट में फँसा देते हैं और टेप से फिक्स कर देते हैं। इस प्रकार अंग्रेजी के अक्षर वाई जैसी संरचना बन जाती है। इस में जो सीधा स्ट्रॉ है उसमें से एक ऊनी या सूती धागा पिरो देते हैं और नीचे उसमें बारीक गाँठ लगा देते हैं। जो स्ट्रॉ में से पास

हो सके। तिरछी पाइप में से जब हम फूँक मारते हैं तो वह सीधे पाइप में से अगली तरफ से बाहर निकलती है व तेज प्रवाह के कारण कट से आगे वाले भाग में निम्न वायु दबाव बनाती है जिस कारण कट के पिछले भाग का उच्च वायु दबाव धागे को आगे धकेलता है। बच्चों को यह विज्ञान खिलौना बहुत पसंद आया और उन्होंने इस खिलौने को घर जाकर बनाया। इसका नाम रखा घूमने वाला धागा।

4. आओ धूप के रंगों को देखें

सेनेटरी फिटिंग का एक 5 सेंटीमीटर व्यास का पाइप या बिजली फिटिंग का 1.5 इंच व्यास का पीवीसी पाइप जिसकी लंबाई 1 फुट कम से कम होनी चाहिए। उसमें नीचे 6-7 सेंटीमीटर जगह छोड़कर एक तिरछा कट लगाते हैं और उस कट के के अंतिम बिंदु के सामने दूसरी तरफ एक छोटी सी खिड़की बनाते हैं व उस कट में एक सीडी लगाते हैं। सीडी का चमकदार हिस्सा ऊपर की तरफ रखते हैं। उपकरण तैयार है। अब इसे धूप में ले जाकर इसकी खिड़की पर आँख लगाकर सीडी के पाइप के अंदर वाले भाग को देखते हैं तो उस पर बहुत बढ़िया कलर पैटर्न (स्पेक्ट्रम) है जो सूर्य की धूप के सात रंगों को दिखाता है। बच्चे इस सात रंग के रंगीन पैटर्न को देखकर बहुत खुश हुए और उन्हें पता चला कि धूप में 7 रंग होते रंग होते हैं जिनको क्रमशः बैजानीहपीनाला शब्द से याद रखा जा सकता है। जिसमें बैंगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी और लाल रंग होते हैं। बच्चों को बैजानीहपीनाला शब्द बहुत अच्छा लगा और वह सारा दिन बैजानीहपीनाला शब्द को गाते उत्साहित होते रहे।

5. आओ दूरबीन से अवलोकन करें

दूरबीन यानी टेलिस्कोप। हर विद्यार्थी उत्साहित था कि आज उन्हें टेलिस्कोप से अवलोकन कराया जाएगा। विश्व अंतरिक्ष सप्ताह के अवसर पर विद्यार्थियों को टेलीस्कोप असेंबलिंग करनी सिखायी गयी। सबसे पहले उन्हें बताया गया कि टेलिस्कोप महान वैज्ञानिक गैलीलियो गैलीली की देन है। गैलिलियो पहले व्यक्ति थे जिन्होंने खगोलीय प्रेक्षण, चंद्रमा पर क्रेटरों, चंद्रमा पर पहाड़ों की खोज, बृहस्पति के चार उपग्रहों (जिन्हें गैलीली उपग्रहों के रूप में भी जाना जाता है) की खोज के लिए अपनी बनाई दूरबीन का उपयोग किया था। यहाँ बच्चों को टेलिस्कोप के सभी पार्ट्स दिए गए, जिसमें ऑब्जेक्टिव लेंस, आईपीस, ट्यूब व माउंट आदि बच्चों ने इन सभी पार्ट्स को असेंबल करके अपवर्तक प्रकार का टेलिस्कोप बनाया। उससे दूर की वस्तुओं का अवलोकन किया। इस गतिविधि को करके बच्चे बहुत उत्साहित थे कि उन्होंने पहली बार टेलिस्कोप से अवलोकन किया किया वो भी खुद अपने हाथों से असेम्बल की हुई टेलीस्कोप से। बच्चे बहुत खुश हुए, जब मैंने उनको बताया कि जल्द ही आपको पाँच इंच दर्पण वाली न्यूटोनियन रिफ्लेक्टर टेलीस्कोप व अन्य उन्नत टेलिस्कोप से रात्रि आकाश का अवलोकन करवाया जाएगा।

अच्छा अध्यापक साथियो, विद्यार्थियो व अन्य पाठको! अगले अंक में फिर मिलते हैं। नई मजेदार खेल-खेल में विज्ञान गतिविधियों के साथ।

विज्ञान अध्यापक एवं विज्ञान संचारक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कैंप
खंड जगाधरी, जिला यमुनानगर

अनुकरणीय

धूल से अटे स्कूल को किया गुलो-गुलज़ार

धूलगढ़ गुलडेहरा का रावमा विद्यालय बना सौंदर्यीकरण का गढ़, दूर-दूर से आते हैं लोग

अरुण कुमार कैहरबा

अपने स्कूल को सुंदर बनाना और विभिन्न गतिविधियों में विद्यार्थियों की हिस्सेदारी करवाकर उन्हें आगे बढ़ाना जज्बे का काम है। शिक्षा की गुणवत्ता के नजरिये से यह बेहद महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी है। बच्चों को लोकतांत्रिक मूल्यों से लैस अच्छा नागरिक बनाने की यह जिम्मेदारी केवल अध्यापक की ही नहीं है, बल्कि स्कूल मुखिया, स्कूल प्रबंधन कमेटी, पंचायत व समुदाय सभी की है। इस दिशा में बहुत से लोग संघर्ष कर रहे हैं। हरियाणा के सरकारी स्कूल इस मामले में किसी से पीछे नहीं हैं। प्रदेश के सरकारी स्कूलों में

विभिन्न प्रकार की नवाचारी गतिविधियाँ आयोजित करने का सिलसिला तेजी के साथ आगे बढ़ रहा है।

सौंदर्यीकरण और आनंददायी अधिगम प्रक्रिया के मामले में कुरुक्षेत्र जिला के पेहवा खण्ड के गाँव धूलगढ़ गुलडेहरा का राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय किसी से कम नहीं है। स्कूल का प्रवेश द्वार, सुंदर नारों, उद्धरणों, चित्रों व रंगों से सजा भवन, रास्ते, व्यवस्थित ढंग से लगाई गई क्यारियाँ, कक्षा-कक्ष, पुस्तकालय, स्मार्ट कक्षा-कक्ष, प्रयोगशालाएँ, गतिविधियाँ, वर्दी में सजे बच्चे, पढ़ने-पढ़ाने के तराने सहज ही आगंतुकों का ध्यान अपनी तरफ खींचते हैं। स्कूल के विद्यार्थी ज्ञान-विज्ञान, खेल, सांस्कृतिक गतिविधियों, स्काउट-गाइड सहित अनेक गतिविधियों में सक्रिय हिस्सेदारी करते हैं और अपनी उपलब्धियों से अध्यापकों व ग्रामीणों को गौरवान्वित होने के अवसर देते हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के केन्द्र के रूप में सुंदर सरकारी स्कूल देखने के चाहवान लोग अक्सर यहाँ आते हैं और स्कूल की तारीफ करते हैं। इस तरह धूलगढ़ गुलडेहरा का स्कूल व प्राथमिक पाठशाला बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के साथ-साथ सौंदर्यीकरण की अवधारणा के प्रचार-प्रसार के केन्द्र के रूप में विख्यात होता जा रहा है।

गाँव गुलडेहरा गालव ऋषि के नाम पर बसा है। गाँव में गालव ऋषि के नाम से एक मंदिर भी स्थापित है। गुलडेहरा और पड़ोसी गाँव धूलगढ़ दोनों के नाम से राजकीय प्राथमिक पाठशाला की स्थापना 1962 में हुई थी। बाद में राजकीय माध्यमिक स्कूल, फिर 2004 में राजकीय उच्च विद्यालय के रूप में स्कूल अपग्रेड हुआ। 2013 में उच्च विद्यालय को वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के रूप में पदोन्नत कर दिया गया। स्कूल में धूलगढ़, गुलडेहरा, मांगणा, खेड़ी सीसगरां, गलेडवा, हेलवा, रामगढ़ रोड, अमृतसरिया फार्म, मस्तगढ़ और कैथल जिला के नोच प्लाट गाँव के विद्यार्थी भी पढ़ने आते हैं। स्कूल में छठी से 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों की संख्या 500 के करीब है। प्राथमिक पाठशाला में 170 से अधिक बच्चे हैं। गत दो वर्षों से निजी स्कूल के बच्चों के भी यहाँ आने का सिलसिला चला हुआ है। गत सत्र में 38 बच्चों ने अपने पुराने स्कूल को अलविदा कह कर यहाँ प्रवेश लिया था। नए सत्र में भी निजी विद्यालयों के बच्चों के यहाँ दाखिला लेने का सिलसिला चला हुआ है।

स्कूल को 2017-18 सत्र का जिला स्तरीय मुख्यमंत्री सौंदर्यीकरण पुरस्कार दिया गया। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा करवाए गए सर्वेक्षण में वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल व प्राथमिक पाठशाला ने जिला स्तर पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। 2012-13 और 2016-17 में प्राथमिक पाठशाला ने जिला स्तर पर मुख्यमंत्री स्कूल सौंदर्यीकरण पुरस्कार प्राप्त किया। 2013-14 में राजकीय उच्च विद्यालय को जिला स्तरीय प्रथम पुरस्कार मिला। 2018 में ही राजकीय प्राथमिक पाठशाला को अंग्रेजी माध्यम का दर्जा दे दिया गया। अंग्रेजी माध्यम में पढ़ाई करवाई जाने लगी है। इसी सत्र से पाठशाला की पहली कक्षा को बैग फ्री घोषित कर दिया गया। विद्यार्थियों के बस्ते पिजनहोल में रखे जाने लगे हैं। इसके लिए विभाग से मिले अनुदान से हाल का निर्माण करवाने के बाद उनका प्रयोग किया जाने लगा है। 2019 में कुरुक्षेत्र में आयोजित नवोदय क्रांति परिवार के राष्ट्रीय शैक्षिक विमर्श कार्यक्रम में धूलगढ़ गुलडेहरा की प्राथमिक पाठशाला और वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय को अलग-अलग सम्मानित किया गया। गाँव के सरपंच जितेन्द्र बबलू, स्कूल के प्रधानाचार्य दया सिंह स्वामी व मुख्य शिक्षक पवन मित्तल ने प्रमाण-पत्र प्राप्त किए।

ये सारी उपलब्धियाँ स्कूल ने किस तरह से हासिल कीं, यह जानना बेहद महत्त्वपूर्ण है। निश्चय ही ये उपलब्धियाँ अलग-थलग रह कर हासिल नहीं की जा सकती थीं। समुदाय और विद्यालय के सामूहिक प्रयासों से चामत्कारिक उपलब्धियाँ हासिल की जा सकती हैं। अन्य अच्छे विद्यालयों की तरह ही यह विद्यालय भी इसकी मिसाल बना। विद्यालय समुदाय के बीच पहुँचा और समुदाय ने आगे बढ़कर बच्चों की शिक्षा के लिए अपेक्षित प्रयासों में सहयोग का हाथ बढ़ाया।

कुछ साल पहले स्कूल में पंचायत द्वारा बनाए गए

चार कमरे ही थे। स्कूल के विकास की कहानी में 20 साल पहले पंचायत के योगदान को भी स्मरण किया जाना चाहिए, जब पंचायत ने स्कूल में कमरों के निर्माण का कार्य शुरू किया। स्कूल प्रबंध समिति सदस्य बताते हैं कि यह वर्ष 2000 की बात है जब गाँव गुलडेहरा की सरपंच प्रेम कुमारी बनी थी। उनके कार्यकाल में 2002 से 2005 तक स्कूल में पंचायत ने 25 कमरे बनाए। गाँव की प्राथमिक पाठशाला में 18 सितंबर, 2016 को पवन मित्तल सारसा से स्थानांतरित होकर मुख्य शिक्षक की जिम्मेदारी सँभालते हैं। इसी वर्ष अक्तूबर में उनकी पत्नी व प्राथमिक शिक्षिका रेणुका भी यहीं कार्यभार ग्रहण कर लेते हैं। गाँव सारसा में अपने कार्यों की छाप छोड़ चुके मुख्य शिक्षक पवन मित्तल के स्कूल में पहुँचने से स्कूल में अध्यापकों व विद्यार्थियों की सक्रियता बढ़ जाती है।

स्कूल के मुखियाओं की पहलकदमी से प्रेरित होकर गाँव के मौजूदा सरपंच जितेन्द्र बबलू निरंतर विद्यालय में आते हैं और विद्यालय की जरूरतों का ध्यान रखते हैं। पंचायत ने स्कूल में सोलर पैनल, शौचालय, गेट, भवन तक पहुँचने का रास्ता, रंग-रोगन व सौंदर्यीकरण के अनेक प्रकार के कार्य करवाए हैं। स्कूल के अध्यापक पंचायत के योगदान की सराहना करते हैं। पंचायत ने प्राथमिक पाठशाला में चार एलईडी दी हैं। सोलर पैनल व सीसीटीवी कैमरे लगवाए हैं। पुस्तकालय विकसित करने में भी पंचायत का योगदान रहा है। स्कूल में जिला का पहला स्मार्ट कक्षा कक्ष बनाया गया।

गुलडेहरा के सरपंच जितेन्द्र बबलू का स्कूल के साथ विशेष स्नेह है। आखिर हो भी क्यों न, वे भी तो यहीं से पढ़े हैं। मेरिट में आने वाले बच्चों को सरपंच द्वारा 51सौ रुपये हर बच्चे को दिए जाते हैं। वे अपना जन्मदिन भी स्कूल में मनाते हैं। प्राथमिक स्कूल के बच्चों को पुरस्कार दिए जाते हैं। गाँव धूलगढ़ के सरपंच सुभाष चंद भी स्कूल में यथा संभव योगदान करते हैं। धूलगढ़ पंचायत ने पाठशाला के कार्यालय में एक बैटरी इनवर्टर भेंट किया था। पंचायत समिति अध्यक्ष सुनीता देवी के द्वारा प्राथमिक पाठशाला में एक कमरे और वरिष्ठ माध्यमिक

स्कूल में लड़कों के शौचालय का निर्माण करवाया गया है। एसएमसी प्रधान सुरेन्द्र कुमार व बलदेव सिंह का सक्रिय सहयोग रहता है। भवन की टूट-फूट और खराबी की वे खुद देखभाल करते हैं।

स्कूल के विकास के लिए प्रधानाचार्य व मुख्य शिक्षक द्वारा जहाँ से भी सहयोग मिल सकता है, लिया जाता है। समाजसेवी संस्थाओं व ग्रामीणों के सहयोग का अनंत सिलसिला है। मुख्य शिक्षक पवन बताते हैं कि गाँव गुलडेहरा के समाजसेवी पालाराम ने 2017 में अपने घर की खुशी में स्कूल को वाटर कूलर भेंट किया। जेसीआई क्लब ने इसी वर्ष विद्यालय को आरओ और छह कैंपर भेंट किए। गाँव के समाजसेवी अशोक कुमार अपने पिता जी की पुण्यतिथि पर दो साल से पाठशाला के 51 बच्चों को जर्सियाँ वितरित करते हैं। राजेन्द्र ढांडा ने विद्यालय को तीन पंखे व 101 जर्सियाँ दीं। उन्होंने बताया कि स्कूल के शिक्षक भी स्कूल में यथा संभव योगदान करते हैं। सामाजिक संस्थाओं के द्वारा बच्चों के दाँत व शारीरिक स्वास्थ्य जांच करवाई जाती है। अध्यापकों के परिवारों में भी जब कोई जन्मदिन होता है तो वे स्कूल में पौधे व गमलों का गिफ्ट देते हैं। उन्होंने कहा कि स्कूल के लिए सहयोग देने व लेने की हर संभव कोशिश की जाती है।

सभी के सहयोग से ही स्कूल सौंदर्यीकरण की इबारत लिख पाया है। स्कूल के सौंदर्य को देखने के लिए समय-समय पर स्कूलों के मुखिया, अध्यापक, आम ग्रामीण, पंचायत प्रतिनिधि आते रहते हैं। सिरसा जिला परिषद के चेयरमैन सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति अपनी पूरी टीम के साथ स्कूल में आ चुके हैं। कुरुक्षेत्र जिला के जिला परिषद सदस्य-सुरेन्द्र माजरी, राहुल राणा, रिंकू ने स्कूल का भ्रमण किया। शाहबाद खण्ड के कठुआ गाँव के सरपंच अमरेन्द्र सिंह, मुगलमाजरा के सरपंच रणजीत सिंह, बारणा के सरपंच शिव कुमार, झांसा गाँव की सरपंच मीनू मल, खेड़ी शहीदां के सरपंच अनिल सैनी ने स्कूल का भ्रमण किया और अपने गाँवों के स्कूलों को भी इसी तर्ज पर विकसित करने का अभियान चला दिया। इससे स्कूल सौंदर्यीकरण और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की लौ पूरे प्रदेश में फैल रही है।

2017 में जिला शिक्षा अधिकारी सुमन आर्य ने कुरुक्षेत्र जिला के सभी स्कूलों प्रधानाचार्यों, मुख्याध्यापकों का एक दिन का सेमिनार स्कूल में लगवाया और स्कूलों को ऐसा ही स्कूल विकसित करने की प्रेरणा दी। जिला सूचना अधिकारी विनोद सिंगला ने विभिन्न जिलों के सूचना अधिकारियों और जिला के स्टार अध्यापकों का एक दिवसीय शिविर लगाया ताकि स्कूल का अध्ययन करके प्रेरणा ली जा सके। उपायुक्त एसएस फुलिया, जिला शिक्षा अधिकारी अरुण आश्री, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी सतनाम सिंह भट्टी सहित अधिकारियों ने स्कूल में पहुँच कर अध्यापकों का उत्साहवर्धन किया है। डीसी एसएस फुलिया ने स्कूल की अध्यापिका रेणुका मित्तल के कार्यों की तारीफ की। उन्होंने जिला स्तर पर पंचायत भवन कुरुक्षेत्र में अध्यापकों का प्रशिक्षण आयोजित किया और रेणुका जी को रोल मॉडल के रूप में अपनी बातचीत और अनुभव रखने के लिए कहा। जिला स्तर पर आयोजित होने वाले स्वतंत्रता दिवस समारोह 15 अगस्त, 2018 को रेणुका मित्तल को स्टार अध्यापिका के रूप में पीडब्ल्यूडी

मंत्री राव नरवीर सिंह ने सम्मानित किया। 5 सितंबर को अध्यापक दिवस पर उपायुक्त ने पाठशाला के मुख्य शिक्षक पवन मित्तल को सम्मानित किया। एसडीएम डॉ. किरण सिंह, पूजा चावरिया ने अपने कार्यकाल में स्कूल के कई बार दौरे किए और अध्यापकों व विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया।

सौंदर्यीकरण के अलावा स्कूल में विद्यार्थियों के लिए अनेक प्रकार की गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। स्कूल को चार सदनों में बाँटा गया है- सरस्वती सदन, विवेकानंद सदन, भगत सिंह सदन, डॉ. भीमराव अंबेडकर सदन। इन सदनों के माध्यम से विद्यार्थियों की स्कूल के कार्यों में सक्रिय हिस्सेदारी होती है। विद्यार्थी स्कूल में बनाई गई क्यारियों में सदन के अनुसार ही कार्य करते हैं और क्यारियों की देखरेख करते हैं।

प्राथमिक पाठशाला में शिक्षक ऐसे निभाते हैं सामूहिक जिम्मेदारी-

स्कूल की प्राथमिक पाठशाला तो जिला भर में एक खास मुकाम हासिल कर चुकी है। प्राथमिक पाठशाला में मुख्य शिक्षक पवन मित्तल की अगुवाई में प्राथमिक शिक्षकों में कार्य का विभाजन किया गया है, जिसका सभी अध्यापक पूरी गंभीरता व मेहनत से निर्वहन करते हैं। स्कूल में ऑनलाईन कार्य से संबंधित कार्य की जिम्मेदारी नीरज वर्मा वहन करते हैं। रेणुका गर्ग व सीमा शर्मा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हैं। पवन मित्तल व रेणुका मित्तल ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए बच्चों की वर्दियां अपने निजी कोष से बनवा रखी हैं। वे अपनी गाड़ी का प्रयोग करके बच्चों की विभिन्न कार्यक्रमों में प्रतिभागिता करवाते हैं। शिक्षक कृष्ण लाल व मनोज स्कूल के विद्यार्थियों की कब-बुलबुल की गतिविधियों में सक्रिय हिस्सेदारी करते हैं। स्कूल के बच्चे राज्य व राष्ट्रीय शिविरों में भी हिस्सा ले चुके हैं। प्रेम सिंह स्कूल के स्वच्छता एंबेसेडर हैं और विद्यार्थियों को व्यक्तिगत स्वच्छता व स्कूल परिसर की स्वच्छता के लिए प्रेरित करते हैं। शिक्षक पंकज कुमार विद्यार्थियों को पोषक व स्वादिष्ट मिड-डे-मील खिलाने के लिए मेहनत करते हैं। मुनीष शर्मा स्कूल के गणित विशेषज्ञ हैं, जोकि गणित शिक्षण की सभी समस्याओं को कुशलता से हल करते हैं। स्कूल के विकास के लिए और सहयोग जुटाने के लिए पवन मित्तल लगातार सक्रिय रहते हैं और अध्यापकों का मार्गदर्शन करते हैं। पूरी टीम की एकता व सामूहिकता बेमिसाल है।

बच्चों की उपलब्धियाँ भी बेमिसाल-

मासिक व वार्षिक परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों को सम्मानित किया जाता है। शत-प्रतिशत उपस्थिति, वर्दी, स्वच्छता व सुंदरता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों को नियमित तौर पर सम्मानित किया जाता है। 15 अगस्त और 26 जनवरी को उपमंडल स्तरीय समारोह में स्कूल के कई बच्चे सम्मानित किए जा चुके हैं। रेडियो स्टेशन कुरुक्षेत्र में धूलगढ़ गुलडेहरा के बच्चों ने कई बार अपनी प्रस्तुतियाँ दी हैं। प्रातःकालीन सभा में बच्चे हिन्दी व अंग्रेजी में भाषण देते हैं। प्रतिदिन प्रश्नोत्तरी व सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ होती हैं। उससे पहले अध्यापक अपने बच्चों को सदन के अनुसार तैयार करवाते हैं। स्टार बच्चों के नाम कक्षा-कक्ष के बाहर लिखवाए जाते हैं। हर महीने विद्यार्थियों में बोर्ड पर अपना नाम लिखवाने की सकारात्मक प्रतिस्पर्धा बनी रहती है। विद्यालय में हर त्योहार धूमधाम से मनाया जाता है। चाहे वह दिवाली, होली हो या क्रिस्मस या फिर ईद। इन कार्यक्रमों के जरिये विद्यार्थियों का देश की बहुलतापूर्ण संस्कृति से परिचय होता है। स्कूल में बच्चों का जन्मदिन भी उत्साह के साथ मनाया जाता है। स्कूल में विज्ञान प्रयोगशाला, पुस्तकालय, स्मार्ट रूम का बहुत ही अच्छे ढंग से इस्तेमाल किया जाता है। पुस्तकालय की सुंदरता और बैठने की व्यवस्था भी ध्यान आकर्षित करती है। इतने सुंदर ढंग से सब कुछ सजाया गया है कि यह सीखने और सीखने की गुणवत्ता का महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व साबित होता है। प्रधानाचार्य दया सिंह स्वामी पूरी गतिविधियों में स्कूल का कुशल मार्गदर्शन करते हैं। अध्यापकों का कहना है कि सारी उपलबधियों में उनका अहम योगदान है। वे मार्गदर्शित करते हुए अध्यापकों व विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हैं।

धूल से सने स्कूल को गुलोगुलजार करने में पंचायत ने निभाई सक्रिय भूमिका-

गुलडेहरा के सरपंच जितेन्द्र बबलू का कहना है कि गाँव का भविष्य बच्चों में है। बच्चे पढ़ेंगे तो ही गाँव व समाज आगे बढ़ेगा। उनमें भी लड़कियों का पढना बेहद जरूरी है। गाँव में जब दसवीं तक का ही स्कूल था तो दसवीं करने वाली दस में से केवल चार लड़कियाँ ही आगे पढ़ पाती थीं। उन्होंने कहा कि बताया कि वे भी इसी स्कूल से पढ़े हैं। जब 1985-86 के करीब वे स्कूल में पढ़ते थे, तो स्कूल में धूल उड़ती थी। उस समय यह आठवीं तक का ही स्कूल था। तभी से मन में कसक थी। जब मौका मिला तो वे धूल-धूसरित स्कूल को गुलोगुलजार करने के मार्ग में आगे बढ़ गए। उन्होंने कहा कि जब स्कूल का पूरा स्टाफ बच्चों की शिक्षा के लिए कड़ी मेहनत कर रहा हो तो यह उत्साह दोगुना हो जाता है। सभी बच्चों की बेहतर शिक्षा के लिए वे स्कूल में संसाधनों के स्तर पर कमी नहीं आने देते। सारे कैंपस में सीसीटीवी

सरपंच जितेन्द्र बबलू

कैमरे लगवाए गए हैं। शौचालयों के चार सैट बनवाए गए हैं। डीसी सुमेधा कटारिया की प्रेरणा एवं सहयोग से जिला में सबसे पहले उनके स्कूल में स्मार्ट क्लास रूम बनवाया गया। स्कूल में शिक्षा विभाग व पंचायत विभाग कहीं से अनुदान मिले, लाने की कोशिश की जाती है।

अरुण कुमार कैहरबा
हिन्दी प्राध्यापक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कैंप
जिला-यमुनानगर

'सक्षम हरियाणा' के पॉवर हाउस : सुदर्शन पुनिया

डॉ.सीमा शर्मा

सुदर्शन पुनिया- एक ऐसा नाम जिसे हरियाणा सरकार के शिक्षा विभाग का हर व्यक्ति अपनी प्रेरणा और ऊर्जा का स्रोत मान चुका है। हाल ही में हरियाणा सरकार द्वारा सम्मानित किया गया और उनको विद्यालय शिक्षा विभाग हरियाणा के महानिदेशक आदरणीय डॉ राकेश गुप्ता जी ने मुख्यमंत्री जी के सामने सक्षम के 'पॉवर हाउस' की उपाधि दी। सुदर्शन जी एक ऐसी शख्सियत हैं जिन्होंने अपनी सूझबूझ और लगन से प्रदेश की शिक्षा प्रणाली को अपने सक्षम होने का लोहा मनवा दिया है। सुदर्शन जी डाइट माच्छरौली में असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं व झज्जर जिले में सक्षम हरियाणा के नोडल अधिकारी हैं।

गत दो वर्षों से हरियाणा सरकार ने अपने प्रमुख प्रोजेक्ट 'सक्षम के माध्यम से शिक्षा के प्रणालीगत परिवर्तन की दिशा में बहुत महत्त्वपूर्ण व ऐतिहासिक कदम उठाया है। गवर्नेंस कंसल्टिंग फर्म समग्र के साथ काम करते हुए, सरकार के मुख्य लक्ष्यों में से एक- हरियाणा के प्रत्येक प्रशासनिक ब्लॉक में प्राथमिक शिक्षा के स्तर का निरीक्षण करना और ग्रेड-स्तर यानी सक्षम स्थिति तक पहुँचाने के लिए शिक्षकों व बालकों को प्रेरित करना था। इसके लिए 'थर्ड पार्टी असेसमेंट' का प्रावधान रखा गया ताकि पारदर्शिता बनी रहे व प्रश्नपत्रों का स्तर भी ग्रेड स्तर क्षमताओं के अनुरूप ही रहे सब कुछ एनसीईआरटी के ग्रेड स्तर दक्षताओं की सूची के मुताबिक किया जाना तय हुआ।

उल्लेखनीय है कि हरियाणा में प्रथम सक्षम घोषणा के तहत प्रत्येक ब्लॉक शिक्षा अधिकारी को मूल्यांकन के लिए अपने ब्लॉक को स्वेच्छा से नामांकित करना था। यदि थर्ड पार्टी असेसमेंट में हिंदी और गणित में 80% प्रतिशत छात्रों को ग्रेड स्तर पर पाया जाता था, तो ब्लॉक को 'सक्षम'घोषित कर दिया जाता था। अब हरियाणा की प्रथम सक्षम घोषणा की सफलता के बाद सक्षम घोषणा का दूसरा चरण भी शुरू हो गया है जिसका नाम है 'सक्षम घोषणा 2.0' जिसमें और विषय भी जोड़ दिए गए हैं। यह पहल इस नजरिए से की गयी थी ताकि प्रत्येक प्रशासनिक अधिकारी, शिक्षा अधिकारी, विद्यालय मुखिया स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना से बालकों के ग्रेड स्तर क्षमताओं को प्राप्त करने के लिए प्रयास करें व 'सक्षम' स्तर प्राप्त करने के पश्चात खुद को गौरवान्वित महसूस करें।

जब प्रदेश के सरकारी स्कूलों में लगातार शिक्षा के स्तर के गिरने की बातें उजागर हो रहीं थीं, ऐसे समय में सरकार द्वारा यह सकारात्मक कदम उठाया जाना अपने आप में एक अनूठी पहल थी। बहुत से लोगों के मन में इस संबंध में अनेक आशंकाएँ थीं, क्योंकि कुछ ही महीनों में बच्चों के सीखने के स्तर को ज़मीन से आसमान पर पहुँचाने जैसा यह मापदंड हर जिले में नियुक्त किये गए सक्षम नोडल अधिकारियों के भी गले नहीं उतर रहा था और यह तो सभी जानते हैं कि जब तक हम किसी कार्य की सफलता के प्रति आश्वस्त नहीं होते तब तक हमारी पूरी ऊर्जा और मन उस कार्य में नहीं लग पाते। मगर ऐसे में एक व्यक्ति था जो इस योजना की सफलता के प्रति आश्वस्त था जो यह समझता था उनकी खोयी हुयी इज्ज़त वापिस दिलाने का यही एक रास्ता था कि कड़ी मेहनत करके खुद को सक्षम साबित किया जाए। साथ ही जनता तक यह सन्देश पहुँचाया जाना ज़रूरी था कि अध्यापक आज भी बालक के जीवन में उतना ही महत्त्व रखता है, जितना पहले रखता था। और साथ ही वह ये भी जानता था कि स्कूल तक आये हर बालक को ग्रेड स्तर क्षमता दिया जाना उस बालक का अधिकार था। वह व्यक्ति और कोई नहीं बल्कि सुदर्शन पुनिया ही थे। तो बस उन्होंने इस मिशन को कामयाब बनाने के लिए कमर कस ली। पहले ही दिन से अपने अधिकारियों से मिलकर योजनायें बनानी शुरू कर दिन प्रतिदिन विद्यालयों में जाना, विद्यार्थियों को कक्षा कक्ष में प्रेरित करना, अध्यापकों

से मिलना, पठन-पाठन संबंधित समस्याओं का निदान करना, उन्हें प्रेरित करना आदि शुरू कर दिया। ऐसा नहीं है कि शुरू से ही उन्हें सफलता मिलनी शुरू हो गयी। उनके कई प्रयास असफल भी हुए, लेकिन हर बार अपनी योजनाओं का अवलोकन कर वे नयी योजना बनाते रहे। नवाचार का सहारा लेकर अध्यापकों की ट्रेनिंग करवानी शुरू कर दी, जिसमें सिर्फ ग्रेड स्तर क्षमताओं पर ही चर्चा होती थी व उन्हें प्राप्त करने के नित नए तरीके खोजे जाने लगे। इसी दिशा में उन्होंने कुछ 'स्टार टीचर्स' को पहचान कर उनकी मदद से अपने कार्य को एक नया रूप देने का कार्य किया उन्होंने अपने खुद के वाहन से जिला झज्जर के लगभग सभी विद्यालय तक मेंटरिंग की है। उनके इस अभियान में उनके डाइट माछरौली के पूर्व प्राचार्य और वर्तमान में जींद के जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी श्री दलजीत तोमर, वर्तमान प्राचार्य श्री बीपी राणा, उनके सहकर्मी श्री जितेंद्र मलिक, निर्मल गुलिया, सुनील कुमार, भूपेन्द्र रोज, राजीव देसवाल, देवेन्द्र गुलिया, विनोद कुमारी आदि प्राध्यापक साथियों ने भरपूर सहयोग किया। मातनहेल के तत्कालीन खंड शिक्षा अधिकारी श्री राजेश खन्ना, जिला शिक्षा अधिकारी श्री सतबीर सिवाच, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी श्री सुरेन्द्र चौहान सभी खंड शिक्षा अधिकारीगण ने भरपूर सहयोग और प्रोत्साहन दिया और फिर तत्कालीन जिला उपायुक्त श्रीमती सोनल

गोयल ने उनकी कार्यशैली को सराहना शुरू कर दिया प्रशासनिक अधिकारी सोनल गोयल जी के साथ आते ही सुदर्शन जी की ताक़त दोगुनी हो गयी, क्योंकि अब वे ज्यादा लोगों तक अपनी बात पहुँचा सकते थे और ज्यादा विस्तृत योजनायें बना सकते थे। उन्होंने शुरूआती दौर में झज्जर के पाँच में से केवल एक ब्लॉक (मातनहेल) पर काम किया, जो किसी ट्रायल जैसा ही था। पहले सक्षम असेसमेंट में ही उसे सक्षम कर झज्जर को सबसे पहले ब्लॉक सक्षम करने वाले जिले की श्रेणी में ला खड़ा किया। फिर बेरी ब्लॉक, उसके बाद बहादुरगढ़ और साल्हावास और अंत में झज्जर ब्लॉक सक्षम कर दिखाए इसके साथ ही उन्होंने झज्जर को प्रदेश का पहला सम्पूर्ण सक्षम जिला बना दिया। शिक्षा निदेशक डॉ. राकेश गुप्ता जी ने खुद कई बार उनके कार्यों की प्रशंसा की, ताकि अन्य जिला नोडल अधिकारी भी प्रेरित हो सकें। उनके कार्यों की ख्याति दूर-दूर तक फैलती गयी और पेहोवा ब्लॉक अधिकारी द्वारा उन्हें उनकी सक्षम टीम को संबोधित करने व मार्गदर्शन करने हेतु बुलाया गया। कुरुक्षेत्र के उपायुक्त महोदय ने भी उन्हें सक्षम सभा के मार्गदर्शन के लिए बुलाया, फिर करनाल में भी उन्हें बुलाया गया। गौरतलब है कि जहाँ-जहाँ भी सुदर्शन जी के चरण पड़ते गए, वह ब्लॉक और जिला सक्षम घोषित होता गया। न जाने कैसा जादू है उनके व्यक्तित्व में जो भी उनके संपर्क में आता रहा , वह प्रेरित होता रहा और अपने कार्य में सफल होता रहा। सुदर्शन जी के लिए जनाब वसीम बरेलवी साहब का एक शेर याद आता है- जहाँ रहेगा वहीं रोशनी लुटायेगा, किसी चराग का अपना मकाँ नहीं होता। अब तो कई जिले सक्षम हो चुके हैं, मगर झज्जर को हरियाणा का पहला सक्षम जिला घोषित करवाकर सुदर्शन जी ने प्रदेश के इतिहास में अपना नाम दर्ज करवा लिया हैऔर इतिहास वही लोग बनाते हैं जो उन कामों को कर दिखाते हैं जिन्हें लोग असंभव समझते हैं। उनकी यह यात्रा अभी ख़त्म नहीं हुई है। हरियाणा सरकार द्वारा अगले चरण में चलाये गए सक्षम प्लस घोषणा में भी पुनिया जी ने बेरी और मातनहेल ब्लॉक को सक्षम प्लस कर दिखाया है। अब सक्षम घोषणा 2.0 पर उनका प्रयास फिर से जारी है।

जुलाई माह में शिकागो यूनिवर्सिटी सेंटर में 'हाउ डाटा कैन बी यूज्ड इन एजुकेशन' पर हुए नेशनल कांफ्रेंस में सुदर्शन जी ने हरियाणा का प्रतिनिधित्व किया और प्रदेश के सक्षम प्रोजेक्ट की प्रेजेंटेशन देकर सबको इतना प्रभावित कर दिया कि दूसरे कई राज्य भी अब इस मॉडल को अपनाने की बात सोचने लगे हैं। सुदर्शन पुनिया अपने आप में एक ब्रांड बन चुके हैं और सक्षम हरियाणा के पावरहाउस, जो जितने काबिल हैं उतने ही विनम्र भी हैं किसी भी ब्लॉक या जिले द्वारा बुलाये जाने पर अपनी कार खुद ड्राइव करके जाते हैं और बिना किसी स्वार्थ के उनसे अपने विचार व योजनायें सांझा करते हैं। ऐसे शिक्षक का हमारे बीच होना हम सबके लिए गर्व की बात है। प्रदेश के लिए गर्व की बात है, देश के लिए गर्व की बात है। वह दिन दूर नहीं जब अपने कामों से धूम मचाते हुए सुदर्शन जी एक दिन अंतरराष्ट्रीय पटल पर हरियाणा का प्रतिनिधित्व करते नज़र आएँगे। उन्हें ढेरों शुभकामनायें।

वरिष्ठ प्राध्यापिका
डाइट पाली, फरीदाबाद

मेरी विज्ञान अध्यापिका

मेरी विज्ञान अध्यापिका
बड़े अच्छे से अपना
फर्ज निभाती है
हर कॉन्सेप्ट अच्छे से
समझाती है
हर क्रिया का अच्छे से
फंडा बताती है
वही एक मुझे अन्धविश्वास के
ज़हर से बचाती है।

मेरी विज्ञान अध्यापिका
सुबह-सुबह नहा कर
सूर्य देवता को
जल चढ़ाती है
दौड़ती है स्कूल की तरफ
कहीं बिल्ली रास्ता काट जाए
तो सहम जाती है
रास्ता बदलती है
लंबी दूरी तय करके भी
मुझे अन्धविश्वास के
ज़हर से बचाती है।

मेरी विज्ञान अध्यापिका
समझाती है मुझे
साफ-सफाई के नफे
पर मंगल के दिन नाखून
काटने से बचती है
गुरुवार को सिर नहीं
धोती है
गंदे केश होने पर भी
मुझे अन्धविश्वास के
ज़हर से बचाती है।

मेरी विज्ञान अध्यापिका
समझाती है मुझे
रसायनों की रसायनों से अभिक्रिया
स्वयं करती है
ताबीज गंडों पर विश्वास
नजरढीटों बदद्दुआओं से भयग्रस्त
होने पर भी
मुझे अन्धविश्वास के
ज़हर से बचाती है।

मेरी विज्ञान अध्यापिका
समझाती है मुझे
ग्रह उपग्रह पिण्डों की चाल
स्वयं
नजूमियों, पीरों भविष्य वक्ताओं की
शरण में गिड़गिड़ाती है
अघोरियों कापालिकों के
गंदे खुरों पर रगड़ कर
अपने माथे को
मुझे अन्धविश्वास के
ज़हर से बचाती है।

मेरी विज्ञान अध्यापिका
मुझे बताती है
रंग को रंग में मिलकर
एक नया रंग बनाने का
नुस्खा
मंगल को लाल, गुरु को पीला
शनि को काला लिबास
ओढ़ती है
इन खास रंग लिबासों को
पहन कर भी
मुझे अंधविश्वास के
ज़हर से बचाती है।

मेरी विज्ञान अध्यापिका
क्यों नहीं
विज्ञान को किताबों प्रयोगशालों
से निकालती और
जीवन में उतारती
ऐसे क्यों नहीं वह
स्वयं को अन्धविश्वास के
ज़हर से बचाती।

सुनील अरोरा
पीजीटी विज्ञान
राउवि समलेहड़ी, जिला पंचकूला

क्या आप जानते हैं?

प्यारे बच्चो ! जब आप किसी ऊँचे पहाड़ी इलाके में गए होंगे तो आपने देखा होगा कि ऑक्सीजन की कमी के कारण हम लोग तो जल्दी से थक जाते हैं और साँस लेने में दिक्कत आती है, लेकिन वहाँ के निवासी बड़ी सक्रियता से अपने जीवन की सभी गतिविधियाँ कर लेते हैं। जानते हैं ऐसा कैसे होता है? अगर नहीं तो आइये, मैं आपको बताती हूँ-

ऐसे क्षेत्र के निवासी अधिक ऊँचाई के प्रति अनुकूलित हो जाते हैं। इनकी वक्षगुहा का आयतन अधिक होता है जिससे इनके फेफड़ों के वायुकोषों का सतही क्षेत्र अधिक हो जाता है। इनके रुधिर में लाल रुधिर कणिकाओं की संख्या अधिक होती है तथा ऊतकों के मध्य अपेक्षाकृत अधिक सघन कोशिका जाल होता है। परिश्रम करने से उनकी पेशियों में कम केशिका किण्वन होता है और लेक्टेर की मात्रा कम बनती है। अतः इन्हें श्रम से होने वाली थकान को दूर करने के लिये कम ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- तुम्हारी यामिका दीदी

सामान्य ज्ञान

प्रश्न- 1. विश्व का सबसे छोटा महाद्वीप कौन सा है ?
उत्तर- आस्ट्रेलिया
प्रश्न- 2.कर्क रेखा भारत के कितने राज्यों से गुजरती है?
उत्तर- 8 राज्यों से
प्रश्न- 3.नाथूला दर्रा किस राज्य में है?
उत्तर- सिक्किम
प्रश्न- 4.जिम कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान किस राज्य में है?
उत्तर- उत्तराखण्ड
प्रश्न- 5. दिल्ली किस नदी के किनारे बसा है?
उत्तर- यमुना नदी
प्रश्न- 6. भारत का सबसे लम्बा बाँध कौन सा है
उत्तर- हीराकुंड बाँध, उड़ीसा
प्रश्न- 7.हमारे देश में किस फल को 'फलों का राजा' कहा जाता है?
उत्तर- आम को
प्रश्न- 8. भारत की सबसे बड़ी मीठे पानी की झील कौन सी है?
उत्तर- वूलर झील, जम्मू कश्मीर

पहेलियाँ

1. गुणवत्ता में उपयोगी हैं, किन्तु स्वभाव कठोर ।
चालक विद्युत की, ऊष्मा की, मिल जाएँ चहुँ ओर।।

2. हाइड्रोक्लोरिक, सल्फ्यूरिक या भले नाइट्रिक अम्ल।
कौन नाम से इन्हें पुकारें, जरा लगाओ अक्ल ।।

3. कुछ पदार्थ अम्लीय मिलेंगें, क्षारीय पर अन्य ।
एक और भी श्रेणी इनकी, जाओ बूझ हो धन्य ।।

4. एक अम्ल का नाम बताओ, करता है कल्याण ।
जन्तु और पौधे मिल इसका, कर लेते निर्माण ।।

5. मैं धरती को रहता घेरे, धरती रहती भीतर मेरे ।
काम आवरण का मैं करता, रात, दोपहर और सवेरे ।।

6. धुआँ, धूल व गंदी गैसें, मिलकर मुझे बनाते ।
नाम बताओ मेरा तुम, मुझसे नुकसान उठाते ।।

7. हम पदार्थ होते हैं ऐसे, करते वायु अशुद्ध ।
धूल, धुआँ, गंदी गैसों से, होता अपना युद्ध ।।

8. जब अम्लीय ऑक्साइड घुल, करें अशुद्ध हवा ।
दिख लाया करती वह जग में तब अपना जलवा ।।

9.धुआँ और कोहरा दोनों ही, इसके पक्के मित्र ।
दोनों मिलकर खींचा करते, इसका सुंदर चित्र ।।

10. ईंधन जब अपूर्ण जलता है, देखे यह संसार ।
राख, कार्बन, कण तेलों के, इसको दे आकार ।।

उत्तर :- 1.धातुएँ 2.खनिज अम्ल 3.उदासीन 4.कार्बनिक अम्ल 5.वायुमंडल 6.प्रदूषण 7.प्रदूषक 8.अम्लीय वृष्टि 9.स्मॉग 10.धुआँ

- डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल
सेवानिवृत्त अध्यापक, शिक्षा विभाग हरियाणा

चालाक लोमड़ी

एक लोमड़ी बहुत भूखी थी। वह अपनी भूख मिटने के लिए भोजन की खोज में इधर उधर घूमने लगी। जब उसे सारे जंगल में भटकने के बाद भी कुछ न मिला तो वह गर्मी और भूख से परेशान होकर एक पेड़ के नीचे बैठ गई। अचानक उसकी नजर ऊपर गई। पेड़ पर एक कौआ बैठा हुआ था। उसके मुँह में रोटी का एक टुकड़ा था। कौवे को देखकर लोमड़ी के मुँह में पानी भर आया। वह कौवे से रोटी छीनने का उपाय सोचने लगी।

तभी उसने कौवे को कहा, क्यों भई कौआ भैया! सुना है तुम गीत बहुत अच्छे गाते हो. क्या मुझे गीत नहीं सुनाओगे ? कौआ अपनी प्रशंसा को सुनकर बहुत खुश हुआ। वह लोमड़ी की बातो में आ गया. गाना गाने के लिए उसने जैसे ही अपना मुँह खोला, रोटी का टुकड़ा नीचे गिर गया. लोमड़ी ने झट से वह टुकड़ा उठाया और वहाँ से भाग गई। अब कौआ अपनी मूर्खता पर पछताने लगा।

यह छोटी कहानी हमें स्पष्ट सन्देश देती है कि अपनी झूठी प्रशंसा से हमें बचना चाहिए। कई बार हमारी हमें कई ऐसे लोग मिलते हैं जो हमसे अपना काम निकालने के लिए हमारी झूठी तारीफ़ करते हैं। एक बार जब वे हमसे अपना काम निकाल लेते हैं तो उसके बाद फिर हमें पूछते भी नहीं। इसलिए हमेशा झूठी प्रसंशा से बचें।

-पंचतंत्र से

मुहावरों की कविता

ओ मेरे आँखों के तारे,
डूबते तिनके के सहारे!
लाल-पीले क्यूँ होते जी,
बेच घोड़े क्यूँ सोते जी!
होते क्यूँ आपे से बाहर,
हँसना है आँसू पी-पी कर!
आकाश- पाताल कर जाना,
पत्थर पर भी दूब उगाना!

मेराज रज़ा
शिक्षक
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय ब्रह्मपुरा,
मोहिउद्दीननगर
समस्तीपुर, बिहार

जंगल की साफ-सफाई

सिंहराज ने जानवरों की-
भारी सभा बुलाई,
और कहा जंगल की रखनी-
है अब साफ-सफाई।

सभी ओर कूड़ा है, गँदला-
है झीलों का पानी,
धूल, धुआँ के मारे सबको-
याद आ रही नानी।

चलें साथ, मिल करें सफाई
झाड़ू सभी उठाएँ,
जंगल के कोने-कोने को-
स्वच्छ रखें, चमकाएँ।

झील और नदियों का कचरा
साफ करें अब सारा,
जिससे हमें मिले पीने को
निर्मल जल की धारा।

अब घर बाहर कहीं खुले में
शौच न कोई जाए,
सभी लोग अपने घर में ही
शौचालय बनवाएँ।

सिंहराज की यह सलाह तब
जानवरों को भाई,
सारे ही रखते हैं, जंगल-
की अब साफ-सफाई।

नहीं कहीं दिखती गंदगी
साफ सब कहीं जल-थल,
और अधिक सुंदर लगता अब
हरा-भरा वह जंगल।

- सूर्यकुमार पांडेय
538 क/514, त्रिवेणीनगर द्वितीय,
लखनऊ-226 020

हर स्थिति से जूझने की क्षमता विकसित करें

एक बहुत ब्रिलियंट लड़का था। सारी जिंदगी फर्स्ट आया। साइंस में हमेशा सौ प्रतिशत के आसपास स्कोर किया। अब ऐसे लड़के आम तौर पर इंजीनियर बनने चले जाते हैं, सो उसका भी सिलेक्शन आईआईटी चेन्नई में हो गया। वहाँ से बीटेक किया और वहाँ से आगे पढने अमेरिका चला गया और यूनिवर्सिटी ऑफ़ केलिफ़ोर्निया से एमबीए।

अब इतना पढ़ने के बाद तो वहाँ अच्छी नौकरी मिल ही जाती है। उसने वहाँ भी हमेशा टॉप ही किया। वहीं नौकरी करने लगा। पाँच बेडरूम का घर उसके पास। शादी यहाँ चेन्नई की ही एक बेहद खूबसूरत लड़की से हुई।

एक आदमी और क्या माँग सकता है अपने जीवन में? पढ़ लिख के इंजीनियर बन गए, अमेरिका में सेटल हो गए, मोटी तनख्वाह की नौकरी, बीवी बच्चे, सुख ही सुख।

लेकिन दुर्भाग्यवश आज से चार साल पहले उसने वहीं अमेरिका में सपरिवार आत्महत्या कर ली। अपनी पत्नी और बच्चों को गोली मार कर खुद को भी गोली मार ली। आखिर ऐसा क्या हुआ, गड़बड़ कहाँ हुई।

ये कदम उठाने से पहले उसने बाकायदा अपनी पत्नी से विचार विमर्श किया, फिर एक लम्बा सुसाइड नोट लिखा और उसमें बाकायदा अपने इस कदम को जस्टिफाई किया और यहाँ तक लिखा कि यही सबसे श्रेष्ठ रास्ता था इन परिस्थितियों में। उनके इस केस को और उस सुसाइड नोट को कैलफोर्निया इंस्टिट्यूट ऑफ़ क्लीनिकल साइकोलॉजी ने स्टडी किया।

पहले कारण क्या था, सुसाइड नोट से और मित्रों से पता किया। अमेरिका की आर्थिक मंदी में उसकी नौकरी चली गयी। बहुत दिन खाली बैठे रहे। नौकरियाँ ढूँढ़ते रहे। फिर अपनी तनख्वाह कम करते गए और फिर भी जब नौकरी न मिली, मकान की किश्त जब टूट गयी, तो सड़क पर आने की नौबत आ गयी। कुछ दिन किसी पैट्रोल पम्प पर तेल भरा बताते हैं। साल भर ये सब बर्दाश्त किया और फिर पति-पत्नी ने अंत में ख़ुदकुशी कर ली।

इस केस स्टडी का विशेषज्ञों ने यह निष्कर्ष निकाला- यह व्यक्ति सफलता के लिए तो तैयार था, पर इसे जीवन में ये नहीं सिखाया गया कि असफलता का सामना कैसे किया जाए।

अब उसके जीवन पर शुरू से नज़र डालते हैं। पढ़ने में बहुत तेज़ था, हमेशा फर्स्ट ही आया। ऐसे बहुत से अभिभावकों को मैं जानता हूँ जो यही चाहते हैं कि बस उनका बच्चा हमेशा फर्स्ट ही आये, कोई गलती न हो उससे। गलती करना तो यूँ मानो कोई बहुत बड़ा पाप कर दिया और इसके लिए वो सब कुछ करते हैं, हमेशा फर्स्ट आने के लिए। फिर ऐसे बच्चे चूंकि पढ़ाकू कुछ ज्यादा होते हैं सो खेलकूद, घूमना फिरना, लड़ाई झगडा, मारपीट, ऐसे पंगों का मौका कम मिलता है बेचारों को, बारहवीं करके निकले तो इंजीनियरिंग कॉलेज का बोझ लद गया बेचारे पर, वहाँ से निकले तो एमबीए और अभी पढ़ ही रहे थे की मोटी तनख्वाह की नौकरी। अब मोटी तनख्वाह तो बड़ी जिम्मेवारी, यानी बड़े बड़े टारगेट्स।

कमबख्त ये दुनिया, बड़ी कठोर है और ये ज़िंदगी, अलग से इम्तहान लेती है। आपकी कॉलेज की डिग्री और मार्कशीट से कोई मतलब नहीं उसे। वहाँ कितने नंबर लिए कोई फर्क नहीं पड़ता। ये ज़िंदगी अपना अलग प्रश्न पत्र सेट करती है. और सवाल, सब आउट ऑफ़ सिलेबस होते हैं, टेढ़े मेढ़े, ऊट-पटाँग और रोज़ इम्तहान लेती है। कोई डेटशीट नहीं ।

एक अंग्रेज़ी उपन्यास में एक किस्सा पढ़ा था। एक मेमना अपनी माँ से दूर निकल गया। आगे जा कर पहले तो भैंसों के झुण्ड से घिर गया। उनके पैरों तले कुचले जाने से बचा किसी तरह। अभी थोडा ही आगे बढ़ा था कि एक सियार उसकी तरफ झपटा । किसी तरह झाड़ियों में घुस के जान बचाई तो सामने से भेड़िये आते दिखे। बहुत देर वहीं झाड़ियों में दुबका रहा, किसी तरह माँ के पास वापस पहुँचा तो बोला, माँ, वहाँ तो बहुत खतरनाक जंगल है।

इस खतरनाक जंगल में ज़िंदा बचे रहने की ट्रेनिंग बच्चों को अवश्य दीजिये। बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ संस्कार भी देना जरूरी है, हर परिस्थिति को खुशी-खुशी धैर्य के साथ झेलने की क्षमता, और उससे उबरने का ज्ञान और विवेक बच्चों में होना ज़रूरी है। माता पिता और अध्यापक सफल जीवन के लिए यह शिक्षा अवश्य दें।

लेखक- अज्ञात (फेसबुक से)

विद्यार्थियों के लिए आदर्श बनें

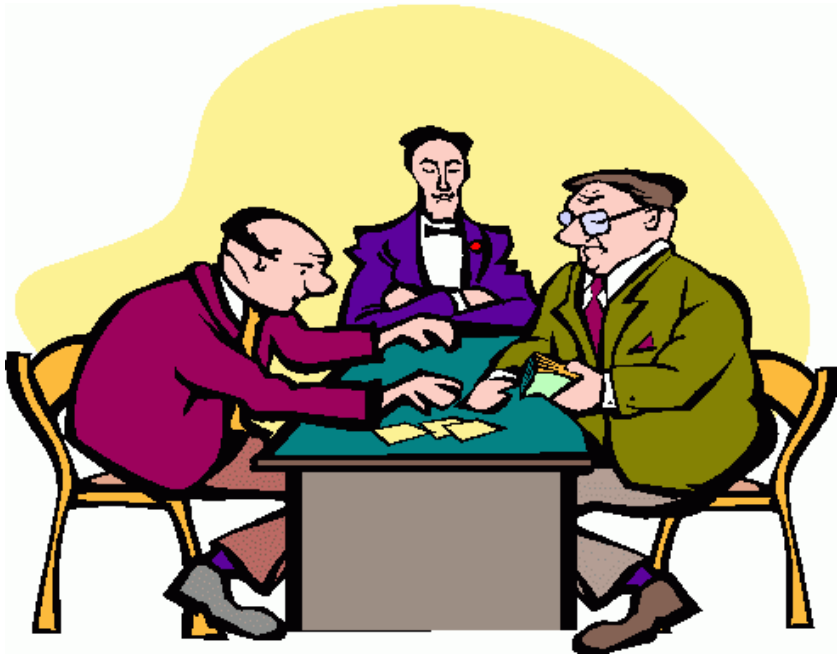

शिक्षक होना कम गौरव की बात नहीं होती। आखिर व्यक्ति और व्यक्ति के माध्यम से समाज एवं राष्ट्र के निर्माण का काम उन्हीं के हवाले होता है। शिक्षकों को अपनी इस विशिष्ट हैसियत का समझकर अनुकरणीय कार्य करने चाहिए। यह एक छोटी सी कहानी यही साबित करती है कि शिक्षक ही विद्यार्थियों का आदर्श होता है।

अर्द्ध-अवकाश का समय था। शारीरिक शिक्षक विद्यालय प्रांगण में घूमते हुए शौचालय के पीछे चले गये। देखते है कि बारहवीं कक्षा के तीन-चार छात्र ताश खेल रहे थे एवं पैसों का लेन-देन भी कर रहे थे। बात समझ में आई कि ये जुआ खेल रहे थे। उन्होंने छात्रों को पकड़कर कक्षाध्यापक जी को सौंप दिया।

कक्षाध्यापक ने छात्रों को डाँटकर पूछा- बताओ, ताश कौन लाया? सही-सही बताओ नहीं तो सभी को सजा मिलेगी।' छात्र कुछ नहीं बोले तो वे उन्हें लेकर प्रधानाचार्य जी के पास चले गये।

प्रधानाचार्य जी ने छात्रों से पूछा- 'बोलो तुमने यह खोटा काम कहाँ से और कब सीखा?'

एक छात्र ने सुबकते हुए कक्षा अध्यापक की ओर इशारा किया और कहा- 'हमारे गुरुजी भी तो कैंटीन वाले कमरे में रोज ताश खेलते हैं।' विद्यार्थी के इस छोटे से वाक्य ने पूरे घटनाक्रम को स्पष्ट कर दिया।

प्रधानाचार्य जी ने छात्रों को जाने का संकेत किया और उनकी कक्षा अध्यापक की ओर देखा। कक्षा अध्यापक कुछ कह नहीं पाए। उनका मस्तक अपने आप ही झुक गया।

हमें यह समझना होगा कि जहाँ विद्यालय में बच्चे छह-सात घंटे बिताते है। वहाँ शिक्षक ही उनके लिए अनुकरणीय होता है। इसलिए हम सबकी यही कोशिश होनी चाहिए कि हमारे द्वारा कोई भी ऐसा कार्य न हो जिसका अनुसरण बच्चों के भविष्य को अंधकारमय बना दे।

वंदना दूबे
विषय विशेषज्ञ
एससीईआरटी हरियाणा
गुरुग्राम

2019

नवंबर माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

1 नवंबर-	हरियाणा दिवस
2 नवंबर-	छठ पूजा
10 नवंबर-	मिलाद-उल नबी या ईद-ए-मिलाद
10 नवंबर-	शांति व विकास के लिए विश्व विज्ञान दिवस
11 नवंबर-	राष्ट्रीय शिक्षा दिवस
11 नवंबर-	अबुल कलाम आज़ाद जन्मदिवस
12 नवंबर-	गुरु नानक जयंती
13 नवंबर-	महाराजा रणजीतसिंह जन्मदिवस
14 नवंबर-	बाल दिवस
19 नवंबर-	इंदिरा गांधी जन्मदिवस
21 नवंबर-	विश्व टेलीविजन दिवस
24 नवंबर-	गुरु तेगबहादुर शहीदी दिवस
26 नवंबर-	संविधान दिवस
30 नवम्बर -	जगदीशचंद्र बोस जन्मदिवस

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।

मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Draft National Education Policy : Vision for out-of-school children

Seema Rajput

The draft National Education Policy released in May 2019 took a step forward by recommending an extension of the scope of the Right to Education Act 2009 by including pre-primary and secondary education within its purview. In this post, Seema Rajput argues that despite the draft Policy highlighting the priority of bringing out-of-school children back into education, no tangible strategy has been proposed keeping in view the practical challenges these children face.

The new and much-awaited draft National Education Policy (NEP) was released into the public domain by the new Human Resource Development (HRD) Minister, Shri Ramesh Pokhriyal Nishank, soon after he took charge on 31 May 2019. The release of the draft Policy was geared towards seeking suggestions and feedback from relevant stakeholders.

The document breaks away from its predecessors in many ways. It commits

to the principles of access, equity, quality, affordability, and accountability as the five major guiding pillars, which set the foundation of the Policy. It aims to be realistic and looks towards the future in order to address the emerging needs of the fast-changing world. Its stated intent is to make sure India's children and youth achieve their full potential and contribute to national development.

The draft Policy takes a step forward by recommending an extension of the scope of Right to Free and Compulsory Education for Children Act (RTE), 2009 to include pre-primary and secondary education within its purview. This will extend the right to free, quality, and equitable education to all children between 3-18 years of age. This is a historic step – however, a constitutional amendment will be required to achieve this goal; currently the 2009 Act provides for free and compulsory education of 6-14 year old children, only.

The Policy's agenda would be incomplete without addressing the educational needs of India's most marginalised children. Many of them are still unable to exercise their right to education despite the availability of multiple policies and legal provisions that commit to ensuring a dignified life and safe and secure childhood for all children.

The draft Policy does acknowledge that around 62 million children of school-going age (between 6 and 18 years) were out-of-school in 2015, and highlights that it should be the top priority of the country to bring out-of-school children back to schools. However, it does not include any specific and clear policy provision for them.

The Policy is silent on the continued existence of never enrolled children within the elementary stage. The 2011 Census data shows that 32 million children, aged 6-13, have never attended any institutional education. While acknowledging that progress would have been made over the last decade, this remains a critical omission.

In the last several years, there have been mass closure of government schools in the name of consolidation of low enrolment schools. As per the latest report card released by the Right to Education Forum in 2019, more than 200,000 government schools have been merged as proposed by different state governments. Children from marginalised communities living in low-density population areas, particularly girls, are most affected and drop out when they lose their village school. The draft Policy, while pointing out that this measure would not lead to significant cost savings, falls short of recommending an end of this practice. Furthermore, the current draft talks about loosening the RTE quality norms, which risks lowering the quality of education and may further result in more children dropping out of the system.

Despite the draft Policy highlighting that the top priority of the country is to bring out-of-school children back into education, there is no tangible strategy proposed keeping in view the practical challenges these children face.

Firstly, there is a need for bringing synergy in all the policies and acts related to children and suggesting practical measures to ensure that all children get their rights and enjoy their childhood. Until children are freed from labour, they cannot be in schools. Census 2011 data reports 10.1 million children – 3.9% of total child population in the age-group 5-14 years – are engaged in child labour. The draft Policy fails to recognise phenomenon of child labour, hence, no specific provision is suggested. Many children, especially above 14 years are engaged in child labour and hazardous occupations. The new amendment made in the Child Labour Act, in 2016, allows children below 14 years to be employed in family enterprises and businesses, which are highly unregulated. Considering that child labour mostly takes place in the economically weaker sections of the society, the draft remains silent on mechanism of bringing back these children into the schools. The Policy must suggest progressive and reformist approaches which revisit the amendments made in 2016 to keep a check on the practice of child labour. The proper implementation of these amendments should do justice to the New Education Policy.

Despite several focused policy measures, girls still continue to be out of education system. Recent studies reveal that due to early and forced marriage, many girls discontinue their education. According to the UNICEF's (United Nations Children's Fund) State of the World's Children 2017 report, India reports having the highest number of child brides in the world at 15,509,000. As per the SDG target 5.3, India has committed to eliminating child, early, and forced marriage by 2030. The draft policy document does not take the cognisance of SDG 5 which talks about bringing gender equality. The final policy document must highlight this issue – suggesting strong implementation of child marriage act and sensitising of Gram Panchayats to check this practice. Policy also needs to suggest strong mechanism to address girls' involvement in childcare responsibilities by putting in place crèche facilities/reactivating Balwadis1 to free them from sibling care. A large number of girls stay back at home for sibling care, making this a critical measure for ensuring gender parity in education.

Around 37 million children have their education disrupted each year because of environmental threats. It results in poor leaning outcomes and eventually, dropping-out from school. The NEP must suggest practical provisions for continued education of children in a safe and protected environment. It also needs to have a vision around the educational provisions for children in need of care and protection.

The potential role of technology needs to be envisioned for tracking out-of-school children and a strong monitoring mechanism is required to ensure that they are brought into the fold of formal education. The NEP should also suggest a robust mechanism for the government to take stock of the number of out-of-school children, every year.

All this is not possible without having a strong mechanism for convergence with other concerned line departments for developing a holistic plan to address the differential needs of out-of-school children. The policy must suggest a vision for how convergence will look at the state and sub-state levels, with a special focus on the million plus cities.

The final policy document must

suggest strengthening of the RTE provisions for out-of-school children, up to age 14, through proper implementation of special training programmes by providing professionally trained teachers, and specially designed curriculum addressing cognitive and psycho-social needs of children. Focus also needs to be given for community mobilisation approaches with a well-designed monitoring system for tracking of learning and mainstreaming of children.

The role of residential schools like Kasturba Gandhi Balika Vidhyalayas, Ashramshalas, Navodaya Vidhyalayas, and tribal welfare schools have a critical role to play in addressing the needs of most marginalised children. These schools were institutionalised for improving educational access, bridging learning gaps, addressing transition and ensuring an enabling environment for the most marginalised children, especially girls. There is a need to strengthen vision, provision and standards to ensure that these institutions act as an important arm to address the needs of out-of-school children.

In order to bring back out-of-school and never enrolled children belonging to the age group of 14-18 years back to the education system, the NEP must recommend high-quality specialised programmes . The school complex/ block resource centre can be used as an adolescent learning centre with appropriate teaching-learning materials and provided with subject-specific teachers who help these children to bridge the learning gaps. Focus needs to be on inclusion, gender sensitivity, and working with adolescents, accelerated learning pedagogy, condensed curriculum and assessment methodologies, and subject-based concepts and skills. Additional technical support can be leveraged from the resource persons at block and district level to strengthen and institutionalise the programme to attract adolescents and encourage them to complete their secondary education. They also need to be imparted vocational/skill-based education, and provisions for the same should be made accordingly. For this, linkages with Pradhan Mantri Kaushal Vikas Yojana2 need to be explored.

All this is possible when the NEP adopts a 'mission approach', with dedicated resources allotted for the tracking and integration of out-of-school children.

Notes:

1. Balwadi is an Indian pre-school run for economically weaker sections of the society, either by government or NGOs.
2. Pradhan Mantri Kaushal Vikas Yojana (PMKVY) is the flagship scheme of the Ministry of Skill Development & Entrepreneurship (MSDE) implemented by National Skill Development Corporation. The objective of this skill certification scheme is to enable a large number of Indian youth to take up industry-relevant skill training that will help them in securing a better livelihood.e up industry-relevant skill training that will help them in securing a better livelihood.

https://www.ideasforindia.in/topics/human-development/draft-national-education-policy-what-is-its-vision-for-out-of-school-children.html

"Reprinted with permission from 'I4I' Ideas for India (www.ideasforindia.in)"

CARE India
srajput@careindia.org

ICE Age

Information, Communication, Entertainment

Smt. RUPAM JHA

"Knowledge is of two kinds. We know a subject ourselves, or we know where we can find information on it."

Samuel Johnson

This age is different from the one earlier ice –age which was a stage in the evolution of man and of the earth. ICE Age here denotes social media, mass media and the virtual world which is today, all encompassing. Today we are flooded with information. In this fast paced world everything goes viral for a while and spreads like wild fire.

We are communicating more but in our virtual world. So many channels to choose from. Social media is the new mass media.

There are advantages galore of this Age that we are living in. We always remain connected with friends and family. Work is fast paced. Communication is quick and clear.

Entertainment galore, plentiful choices. One often hears the term Now Streaming. Along with television, we have Netflix and other entertainment channels via the internet. Face to face interaction is going down but communication is definitely on the rise.

Mass media has been taken over by Social Media. Global communication is the new buzzword. We have forgotten boundaries and barriers and reached out to everyone.

In our virtual space, even time zones have been transcended. We reach out to everyone and everywhere all the time. But what is definitely missing is face to face interaction, the laughter that accompanies the chit chat. Emojis have replaced real time emotional expressions.

Besides 24x 7 News Channels, the latest news is flashed daily in everyone's mobiles. Current happenings are known to all. This trend is global. Many a times, tourists visiting the hinterland have been pleasantly surprised by the tech savvy local youth.

Call Centres in India cater to an international clientele. Timelines are maintained as per international norms, as per the Standard Time of the client country. Accents are adjusted accordingly and as per requirement. Such are the heights of communication, reached

by mankind.

In the information highway, communication moves really fast. Technology has reached the remotest parts of the Globe. Interestingly, one can find technology even in areas where school education may not have penetrated much.

Check Google for every information. Youtube for videos and music. So much of information and communication. A new fusion term emerges, Infotainment. So much of entertainment and information. All this is now really entertaining. Communication is all encompassing.

A very common sight and a popular joke on WhatsApp, is how people are glued to their phones. There are jokes about how people realize their family 's worth only if there is no internet.

Communication - the human connection -is the key to personal and career success.

Paul.J. Meyer

Online shopping is also an offshoot of the virtual world we are living in. It is a new age market which functions 24x7 but lacks in face to face interaction. Every sellable ware is displayed online for the consumer to view and buy. The details of the merchandise too is given. So there is enough information for the buyer to make a choice. In a way, there is communication between the buyer and seller and of course entertainment all along.

A lot of people feel that what they are unable to voice but are able to pen down in facebook and other platforms of social media. This is shared with a multitude of people.

Matrimonial sites are both popular and successful. Match making, once done through the grapevine, is now online and absolutely in sync with the times. The choices available have a broader horizon.

Never is there a moment of boredom in this ICE Age. Everything is a click away. But unfortunately loneliness is on the rise. So many likes but very less actual appreciation. Also somewhere verbal skills have had a meltdown even though communication and connectivity has increased.

You tube has given many a budding artist a platform while also bringing music closer to us. It is no longer audio media or visual media but audio- visual media.

Content based lessons are imparted via audio –visual media. Tests are attempted in the tab, homework is downloaded and counselling sessions done through the mail.

Wastage of paper is less because everything is in soft copy.

Even before people reach their holiday destination, all information about the place is known. Food joints are checked for ratings before trying. Cab rides and small outsourced tasks are also rated. Somehow the novelty is lost in this vast milieu of information and communication.

New media and mobile entertainment are revolutionizing the way people learn about the world.

Stephen Kinzer

We have adapted to this new age and in our fast moving lives, it is very much needed. Technology is our partner in this ICE Age.

Subject Expert
SCERT, Haryana
Gurugram

The Long Winter Story Folktales Stories for Kids

Before any humans walked the earth, when the world was the land of the animals, a very long winter set in. The sun did not come out for three years. The air was always dark. Thick clouds hung low and covered the sky. It snowed all the time.The animals were suffering very much from this long winter. The lack of food was alarming enough, and the lack of heat made it all absolutely unbearable. They became greatly frightened.

The animals called for a grand council to be held. All the beasts, birds, and fishes of all sizes and shapes were invited. At the grand gathering, as the animals looked about, they realized that one creature in all the animal world was missing: Bear. Then they realized that no one had seen any bears for three years.

All the animals quickly agreed that the most important thing to do was to find out what had become of the heat, for without heat their sufferings would never end. Yes, the heat must be found! And it must be brought back again. They decided several quick and brave animals would go on a search mission to the upper world. That's where they suspected the heat had been taken. These are the animals chosen for the mission: Lynx, Fox, Wolf, Wolverine, Mouse, Pike (a freshwater fish), and Dogfish (a kind of small shark--dogfish is a funny name for a shark, isn't it?). After much traveling far and wide through the air, the group finally found the hidden doorway that opened to the upper world. Excited, they all climbed upward to the world above.

After exploring the upper world for some time, they saw a lake. By the lake burned a campfire with a tipi beside it. By the tipi were two young bears. They

asked the cubs where their mother was, and were told she was off hunting. Inside the tipi, a number of big, round bags were hanging up. The animal visitors pointed to the first bag and asked the cubs, "What is in this bag?"

"That," they said, "is where our mother keeps the rain."

"And what is in this one?" the animals said, pointing to the second bag.

"That," the cubs answered, "is the wind."

"And this one?"

"That is where mother keeps the fog."

"And what may be in this next bag?" said the animals.

"Oh, we cannot let you know that," said the cubs, "for our mother told us it was a great secret, and if we tell, she will be very angry and will bop us on our heads when she returns."

"Oh, don't be afraid," said the fox. "You can tell us. She will never know."

Then the cubs whispered, "That is the bag where she keeps the heat."

"Aahh ..." said the visitors. They glanced at one another, and stammered their good-byes. Outside the tipi, they rushed to a hidden spot and held a quick council. Their first agreement was to quickly move, as the mother bear might return at any time. This they did, and found a safer spot to hide. The next topic was more difficult. How to capture the bag with the heat?

"We need to distract the old mother bear somehow," said Fox.

"I know!" said Lynx. "I'll change myself into a deer on the other side of the lake."

"Good idea!" said Wolverine. "The mother bear will see you across the lake and she'll want to hunt you. She'll have to paddle her canoe across the lake, and that will give us time to get the bag with the heat."

"Better yet," squeaked Mouse, "I'll chew a deep cut in the bear's paddle near the blade, so it will take her even longer to canoe across."

"Yes, yes!" cried the others.

So Lynx went around to the other side of the lake and turned into a deer. Now as a Deer, he wandered near the edge of the lake to attract Bear's attention. In the meantime, Mouse scrambled into Bear's canoe and chewed a deep cut in the handle of her paddle close to the blade. The others hid near Bear's tipi.

When one of the bear cubs saw the supposed deer across the lake he cried out, look at the deer on the opposite shore!" The old mother Bear immediately jumped into her canoe and paddled toward it. Deer walked slowly along the beach pretending not to see the canoe, so as to tempt Bear to paddle up close to him. Then all at once Deer doubled about and ran the opposite way. Old Bear threw her whole weight on the paddle to make it go faster, and the paddle broke suddenly where Mouse had gnawed it. The force of Bear's weight threw her into the water. The other animals were watching the hunt from the other side, and as soon as they saw the mother Bear floundering in the water, they ran into the tipi and pulled down the bag containing the heat. One at a time, they tugged the bag through the air toward the opening to the lower world from where they had come.

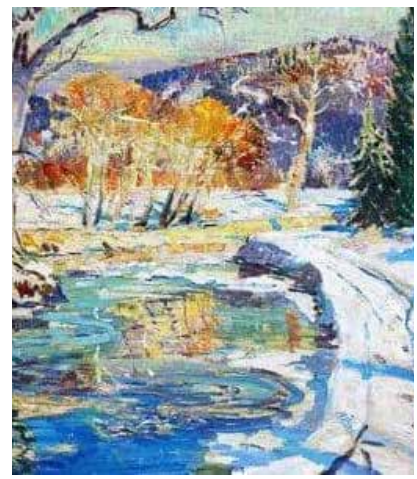

They hurried to get back to the opening as fast as they could, but the bag was very large, and none of them was able to keep up the pace for long. Whenever one tired out, another would take the bag, and in this way they hastened along as quickly as they could, for they knew that the old mother Bear would soon get ashore and return to her tipi, and that when she did she would discover the missing bag. Then she'd be furious and follow their footprints to catch them! Sure enough, the old mother Bear was soon in hot pursuit, and had almost overtaken the animals when they spied just up ahead the opening to the world below. By this time the stronger animals were all so tired, they could hardly move at all. Now Dogfish (the small shark) took the bag and pulled it along a good way, and finally Pike (the freshwater fish) managed to inch it along some more.

At that very moment, Bear lurched toward them. All the animals together pushed the bag until it tipped through the hole to the lower world and they each jumped in after it to safety, just in time. As soon as the bag dropped to the world below, it broke and all the heat crammed inside the bag rushed out. Warmth spread at once to all parts of the world and quickly thawed the ice and snow. Flood waters ran high for many weeks, but then the waters subsided. The trees and bushes and flowers which had been covered by ice grew green leaves once more, and springtime bloomed anew. From that time till now, the world has always seen a warm season returning after a cold one, just as we see it today.

https://www.storiestogrowby.org/story/long-winter/

BEING A TEACHER

Rashmi Prabha

In last few decades the structure of society has undergone a drastic change that has had a direct impact on our future generation. The expectations of the parents from the school and teacher are much more than what is being delivered by to them. The teacher is expected is to be a person of dynamic traits and proficiency who should be capable of grooming a child to a best performer in all respects. As a teacher we must understand "Teaching is second learning". Since a teacher touches infinite souls and is a foster parent for the student in today's time. They shoulder a huge responsibility to society and help to carve and design the future generation. They are the backbone of the society. Being a Teacher: What Does it Mean? A good teacher is a good learner, he/ she learns by reflecting on their experience of the teacher who inspired them. The teacher not only deals with academics of the student but takes care of their emotional, social and physical development. She is equipped with the planning and organizing activities such as quizzes, debates and art and craft in order to inculcate creativity and expand their imagination. To be a teacher like this, a teacher requires creativity, innovation, passion, love for subject and love for children. Today's generation believes in exploring new things and exhibit dynamic learning patterns. The students keep trying new methods and modes of learning. This also involves the use of technology. Under such circumstances, a teacher need to update

herself with technology and should walk one step ahead of the students. A teacher should never lack resources. For a good teacher, her/his own experience is one of the best resources present within him/her. The success of learning depends on positive attitude of a learner and learning strategies used by the teacher. By providing suitable feedback and assessment a teacher can monitor learner's performance. It is very important to understand learning style of the learner as it helps to customize the teaching as per the needs of learner. A teacher must understand the psychology of the child. A child is emotionally attached to the teacher. A teacher must adapt to change. As soon as teachers realize the methodology of teaching isn't working anymore, he/ she should change the approach on the basis of feedback given by the student. A good teacher harmonises curriculum needs and individual needs of the child to ensure success in learning. In this way a teacher inspires hope, ignites the imagination and instils a love of learning. I would say, being a teacher means a lot.

St.Kabir's School, Hisar.

November comes
And November goes,
With the last red berries
And the first white snows.

With night coming early
And dawn coming late,
And ice in the bucket
And frost by the gate.

The fires burn.
And the kettles sing,
And the earth sinks to rest
Until next spring.

By Elizabeth Coatsworth

http://famouspoems-and-notsofamous.blogspot.com/2013/11/elizabeth-coatsworth-november.html

Daily Dilemma of Students

- "I try to concentrate, but I soon find myself thinking about something else."
- "It is difficult for me to focus my attention when I study."
- "My mind keeps going from one thought to another."
- "When I try to focus on what I am doing, soon my thoughts often drift to other things."
- "I cannot finish what I start doing."
- "I lack concentration. I am unable to focus my mind on one thing for more than a few seconds."
- "I often procrastinate, because I cannot focus for long, and then drop what I am doing."

These are common conflicts of most of us or discussion on every PTSM (parent, teacher student meet). The common thread of all these statements is the lack of concentration and the inability to focus the mind on one thing at a time. Lack of concentration affects work, relationships, performance chart, and almost everything else.

In case of poor concentration along with being a health issue needs medical assistance. While poor concentration without any other health issue could be resolved by a few exercises and yoga tips.

There are many issues that can cause a lack of concentration. Among the most common are disinterest, fatigue, and distractions in the vicinity. Sometimes a person is under so much stress that he has difficulty concentrating, and some medications also can cause a person to have problems focusing. Interestingly, even such things as lack of exercise can affect a person mentally and interfere with his ability to concentrate. But on the other hand interest in particular activities also makes you lose your concentration .For example if a child is busy with video games he has poor concentration for others things, poor sleeping patterns, heavy food also brings down the concentration quotient.

There is history period in your class you are sitting with a book, you are physically there but your mind is elsewhere, lecture from teacher's side seems to be some kind of some foreign language which you are not getting. On the other hand you can glue yourself in front of the TV for long hours, or can immerse yourself in your favourite novel.

So there are few tips to concentrate:-

- Set your goal and be firm on it.
- Eat healthy to avoid a restless mind.
- Love yourself and your subject and it will get you good grades.
- Practice yoga every day and it will keep boredom away.
- Want to have more time for fun? Do pranayama.
- Make Sudarshan Kriya your daily homework and other homework will become more fun.
- Sleep well. You won't fall asleep in the History class.
- Beside that do meditation, but keep in mind don't concentrate while meditating.

Break a common myth which says, 'meditation is concentration'. On the contrary, meditation is de-concentration, and good attention and focus are by- products of regular meditation practice.

When you meditate every day, even for a few minutes, your wandering mind (which loves to go off on a trip especially during those boring periods in class) starts settling down and focusing more on the task at hand.

"Meditation makes a wandering mind into a wondering mind!"

Yoga Teacher

E-Commerce
as a career path

Namisha Singh

The growth of online business in the 21st century has changed how we view career possibilities. It is now possible to seriously consider making a living simply from running a business entirely online and selling products or services from your website or even just a store on another company's site. E-Commerce is now a viable career path, especially when you feature in the need for E-Commerce consultants. These professionals help their clients get the publicity they need through marketing and look at sales figures to see what's working and what's not. If you do not want to start an e-commerce business yourself, a career can be had in consultancy. You will be providing advice to clients on many aspects of the e-commerce world. So, you will need to know a thing or two about the sector first and possibly have some experience in system analysis or marketing and social media too.

Ultimately, e-commerce as a career presents an alternative to toiling in an office, and the beauty of it is that you can often choose when to work. In the early days, you may find that you can integrate running an e-commerce business into other employment, making this sector a flexible and rewarding place to work.

E-Commerce Business online

A great website is needed to con-

vince a visitor to part with money.

Talking about E-Business:

Credibility matters- In the absence of a friendly sales assistant and a good shop fit-out, a website needs to display all the right signs of a fully functional web business and make potential customers comfortable doing business. Clearly display phone numbers, address and e-mail addresses so that customers can get in touch. Next, consider payment security using a secure payment gateway such as E-Way. This will assure customers that their credit cards details are secure.

Professional Photography

Professional photography ensures products are displayed in their most attractive and sellable light. Keep the photos simple because when displayed on a website, they appear quite small. Don't forget to include the photos of the business owners and the management. Photos of the management give customers personal contact and it also raises the credibility through recognition.

Information overload-

Online shoppers are inquisitive and get annoyed by having to search for extra information. Think carefully about the questions about each product and answer them. Consider writing a light hearted and informal product description as the online shopping demographic tends to be younger, so you can afford to be a little less serious.

Prices need to be clear-

Remember, people may visit the site

from overseas so ensure the currency is understood and include a currency converter for a global market.

Clarity in delivery prices-

Make your delivery prices easy to find and detail various shipping options with realistic timeframes for delivery. Ask customers to buy through calls to action Use clear, affirmative language to ask customers for the sale. Buying from a website must be easy and intuitive with limited thought required.

Concentrating on what the online customer wants in a shopping experience will inevitably bring legions of loyal and happy shoppers to your website.

HOW PHYSICAL FITNESS MAY PROMOTE SCHOOL SUCCESS

By Gretchen Reynolds

Children who are physically fit absorb and retain new information more effectively than children who are out of shape, a new study finds, raising timely questions about the wisdom of slashing physical education programs at schools.

Parents and exercise scientists (who, not infrequently, are the same people) have known for a long time that physical activity helps young people to settle and pay attention in school or at home, with salutary effects on academic performance. A representative study, presented in May at the American College of Sports Medicine, found that fourth- and fifth-grade students who ran around and otherwise exercised vigorously for at least 10 minutes before a math test scored higher than children who had sat quietly before the exam.

More generally, in a large-scale study of almost 12,000 Nebraska schoolchildren published in August in The Journal of Pediatrics, researchers compiled each child's physical fitness, as measured by a timed run, body mass index and academic achievement in English and math, based on the state's standardized test scores. Better fitness proved to be linked to significantly higher achievement scores, while, interestingly, body size had almost no role. Students who were overweight but relatively fit had higher test scores than lighter, less-fit children.

To date, however, no study specifically had examined whether and in what ways physical fitness might affect how children learn. So researchers at the University of Illinois at Urbana-Champaign recently stepped into that breach, recruiting a group of local 9- and 10-year-old boys and girls, testing their aerobic fitness on a treadmill, and then asking 24 of the most fit and 24 of the least fit to come into the exercise physiology lab and work on some difficult memorization tasks.

Learning is, of course, a complex process, involving not only the taking in and storing of new information in the form of memories, a process known as encoding, but also recalling that information later. Information that cannot be recalled has not really been learned.

Earlier studies of children's learning

styles have shown that most learn more readily if they are tested on material while they are in the process of learning it. In effect, if they are quizzed while memorizing, they remember more easily. Straight memorization, without intermittent reinforcement during the process, is tougher, although it is also how most children study.

In this case, the researchers opted to use both approaches to learning, by providing their young volunteers with iPads onto which several maps of imaginary lands had been loaded. The maps were demarcated into regions, each with a four-letter name. During one learning session, the children were shown these names in place for six seconds. The names then appeared on the map in their correct position six additional times while children stared at and tried to memorize them.

In a separate learning session, region names appeared on a different map in their proper location, then moved to the margins of the map. The children were asked to tap on a name and match it with the correct region, providing in-session testing as they memorized.

A day later, all of the children returned to the lab and were asked to correctly label the various maps' regions.

The results, published last week in PLoS One, show that, over all, the children performed similarly when they were asked to recall names for the map when their memorization was reinforced by testing.

But when the recall involved the more difficult type of learning — memorizing without intermittent testing — the children who were in better aerobic condition significantly outperformed the less-fit group, remembering about 40 percent of the regions' names accurately, compared with barely 25 percent accuracy for the out-of-shape kids.

This finding suggests that "higher levels of fitness have their greatest impact in the most challenging situations" that children face intellectually, the study's authors write. The more difficult something is to learn, the more physical fitness may aid children in learning it.

Of course, this study did not focus specifically on the kind of active exercise typical of recess, but on longer-term, overall physical fitness in young children. But in doing so, it subtly reinforces the importance of recess and similar physical activity programs in schools, its authors believe.

If children are to develop and maintain the kind of aerobic fitness that amplifies their ability to learn, said co-author Charles Hillman, a professor of kinesiology at the University of Illinois and a fellow at the university's Beckman Institute for Advanced Science and Technology, they should engage in "at least an hour a day" of vigorous physical activity. Schools, where children spend so many of their waking hours, provide the most logical and logistically plausible place for them to get such exercise, he said.

Or as he and his co-authors dryly note in the study: "Reducing or eliminating physical education in schools, as is often done in tight financial times, may not be the best way to ensure educational success among our young people."

https://well.blogs.nytimes.com/2013/09/18/how-physical-fitness-may-promote-school-success/?_r=0

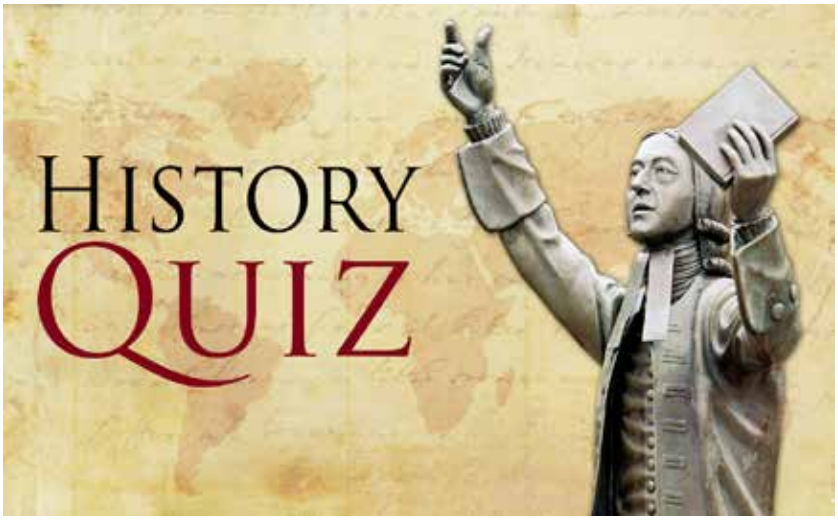

- What was the name of the ship on which the Pilgrims travelled to North America in 1620? **The Mayflower**
- What was the name of the English farmer who invented the seed-planting drill in 1701? **Jethro Tull**
- In which year was Nelson Mandela released from prison? **1990**
- What was the nationality of the first non-Italian Pope since 1523? **Polish** (Karol Wojtyla, Pope John Paul II, Pope from 1978-2005)
- What was the name of the world's first man-made satellite launched by the USSR in 1957? **Sputnik I**
- Which country gained its independence from Denmark in 1944? **Iceland**
- In 1803 who started shipping portions of the sculpted frieze from the Parthenon in Greece to England? **Lord Elgin** (Thomas Bruce, 7th Earl of Elgin - the sculpted frieze is more commonly known as the Elgin Marbles.)
- In which year did French Queen Marie Antoinette go the guillotine? **1793**
- Who became US president after Herbert Hoover? **Franklin D Roosevelt (1933)**
- French King Louis XIV (1638-1715) was the longest reigning European monarch - how long did he reign? **72 years** (from 1643-1715)
- Marjorie Robb, who died in Boston USA in 1992 aged 103, Barbara Dainton, Millvina Dean and Lillian Asplund, achieved notoriety for being among the last living survivors of what? **The sinking of the Titanic (1912)**
- Who in 1963 murdered Lee Harvey Oswald, the assassin (according to official accounts) of US President John F Kennedy? **Jack Ruby**
- The Kiel Canal in Germany, officially opened in 1895, connects which two seas? **North Sea and Baltic Sea** (it is apparently the world's busiest artificial waterway)
- Fletcher Christian, who led the mutiny on the Bounty in 1789, subsequently rediscovered and settled on

which remote Pacific Island, which had been 'lost' from British maritime records? **Pitcairn Island** (in the Pacific Ocean, North-East of New Zealand)

- In 1624 what was purchased from the local inhabitant Native Americans by the Dutch for a reported sum of $24? **Manhattan Island**
- Which New York hotel was designed by Henry Hardenbergh in 1897? **Waldorf-Astoria**
- What date is France's Bastille Day? **14th July**
- Which mountain was climbed for the first time in 1786? **Mont Blanc** (by Jacques Balmant and Michel-Gabriel Paccard - the mountain is on the border of France and Italy, who each claim the summit is in their country)

- In what year did India and Pakistan become independent nations and free from British rule? **1947** (15 August India, and 14 August Pakistan)
- Which planet was discovered by William Herschel 1781? **Uranus**
- In 1926, 19 year-old Gertrude Ederle became the first woman to do what? **Swim the English Channel**
- In what year, generally regarded as marking the end of the Cold War, did the Berlin Wall come down? **1989** (9 November)
- Which calendar was devised in 1582? **Gregorian Calendar** (by Aloysius Lilius - it is the calendar that most of the world uses today)
- Which London Emporium opened in Picadilly 1707? **Fortnum and Mason's**
- British publisher Ludvik Hoch was better known by which name? **Robert Maxwell**
- Which English King abdicated in 1936? **Edward VIII**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-1-history/

Amazing Facts

- **In Australia, a common "Boxing day" activity is surfing.**
- The first product that the toy company Mattel came out with was picture frames.
- Scientists have discovered a way to make biodegradable plastic from plants by using genetic engineering.
- The Earth orbits the Sun at a speed of about 108,000 km per hour.
- Mary Hart, the co-anchor of Entertainment Tonight, has each of her legs insured for one million dollars.
- The two top toys in 1950 were Silly Putty which sold for $1, and Crayola crayons which sold for 50 cents.
- The King Cobra has enough venom in its bite that it can kill up to 13 adults.
- Earl Dean developed the bottle design for Coca-Cola.
- The word "super" to a beekeeper refers to the hive box where the honey is stored.
- By partially filling saucers with vinegar and distributing the saucers around a room, you can eliminate odors.
- The only animals that are capable of turning their heads 180 degrees are from the genus Galago, such as the Tarsier.
- In the United States birds and planes collided more than 22,000 times between the years of 1990 and 1998.
- There are 158 verses in the Greek National Anthem.
- A regulation baseball has exactly 108 stitches.
- In a study that was done by the University of Chicago in 1907, it was concluded that the easiest color to spot is yellow. This is why John Hertz, who is the founder of the Yellow Cab Company picked cabs to be yellow.
- On average it takes a shark seven days to replace a tooth.
- The biggest religious building in the world is Angkor Wat, located in Cambodia. It was built at the end of the 11th century.
- Snails eat with a rasping mouth called a "radula," which has thousands of teeth.
- A dragonfly has a lifespan of for to seven weeks.
- Chewing on gum while cutting onions can help a person from producing tears.
- The first jigsaw puzzle was created by map maker John Splisbury who mounted one of his maps on a sheet of hardwood. He proceeded to cut around the borders of each country use a fine saw.
- Owen Falls Lake is the largest man-made lake in the world.
- If a raisin is dropped into a glass of champagne it will bounce up and down in the glass.
- Reptiles do not perspire, and do not have any oil glands.
- There is a doggy disco held in Italy every year where owners can dance with their dogs.
- In ancient Egypt, the dung beetle symbolized eternal rebirth and the Sun God Khepri.
- If a cockroach breaks a leg it can grow another one.
- Each day the sun causes about one trillion tons of water to evaporate.
- Actress Debra Winger helped to perform the voice of E.T. in the movie ?E.T. The Extra Terrestrial (1982)."
- The only 15 letter word that can be spelled without repeating a letter is uncopyrightable.
- All penguins live south of the equator.
- There are more than 640 muscles in the human body.
- Airports that are at higher altitudes require a longer airstrip due to lower air density.
- Every second, two Barbie dolls are sold somewhere in the world.
- The Ice Cream cone was invented in the summer of 1904 by Charles Menches. It made its debut one year later at the St. Louis World Fair.

http://www.greatfacts.com/

Quiz

General Knowledge

1. Which mountain in the east of Turkey is purported to have been the landing place of Noah's Ark? **Mt. Ararat**
2. The Norse adventurer Rollo was the first ruler of which famous Duchy of northern France? **Normandy** (from Nortmann/Normant - North Man)
3. Which school of art was pioneered by painters such as Pablo Picasso and Georges Braque? **Cubism**
4. Meryl Streep and Dustin Hoffman both won Oscars for their portrayal of a divorcing couple in which 1979 legal drama film? **Kramer Vs. Kramer**
5. Which type of bird was named after a group of islands of the western coast of Africa? (They themselves were named from the Latin for dogs) **Canary** (Canary Islands -> Canariae)
6. With which state in the American West are Mormons most closely associated? **Utah**
7. Which blind singer and pioneer of soul music posthumously received 5 awards at the 2005 Grammy's, following his death the previous year? **Ray Charles**
8. In 1917, the British monarch George V changed the family name from Saxe-Coburg and Gotha to begin which new dynasty, in an attempt to avoid any German connotations? **Windsor**
9. Bohemia, Moravia, and parts of Silesia make up the territory of which modern central-European nation? **Czech Republic**
10. How many official languages are there in the United States of America? **0** (zero)
11. Which German striker holds the record for most goals at the FIFA World Cup, with 16 spread across four tournaments? **Miroslav Klose**
12. What is the surname of father-son politicians Pierre and Justin, who were first elected to the position of Canadian Prime Minister some 40 years apart? **Trudeau**
13. Which African country's official name translates into English as "Lion Mountains"? **Sierra Leone**
14. Bacchus, the Roman god of wine, was analogous to which Greek figure? **Dionysus**
15. Bernardo O'Higgins was an independence leader for which nation in the Americas during the 19th century? **Chile**
16. Which legendary film director (1899-1980) is well-known for his cameo roles in 39 of his 52 feature films? **Alfred Hitchcock**
17. Michael Jordan spent the majority of his NBA career with which Illinois-based basketball franchise? **Chicago Bulls**
18. The 1972 Olympic Games in which city were marred by a terrorist attack targeted at Israeli athletes? **Munich**
19. Tanganyika and Zanzibar united in 1964 to become which modern-day African state? **Tanzania**
20. The Gulf of Tonkin incident was a controversial confrontation that helped spark US intervention in which disastrous Asian war? **Vietnam War**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-451-general-knowledge/

आदरणीय संपादक महोदय!

नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का गतांक पढ़ा। पढ़कर मन प्रसन्न हो गया। पत्रिका में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को सरल एवं सहज बनाने वाले ऐप्स की जानकारी का उल्लेख, खेल-खेल में विज्ञान एवं हिन्दी भाषा का ज्ञान (साँप-सीढ़ी एवं लूडो के माध्यम से)कैसे कराएँ, के बारे में सुन्दर ढंग से बताया गया। घमंडीलाल अग्रवाल द्वारा विज्ञान पर आधारित पहेलियाँ बहुत ही ज्ञानवर्धक लगीं। प्रकृति से सुखानुभूति लेख बहुत ही प्रेरणादायक लगा।

'शिक्षा सारथी' पत्रिका मनोरंजन व ज्ञान से भरपूर श्रेष्ठ पत्रिका है। पत्रिका के प्रकाशन के लिए सम्पूर्ण संपादक मंडल को बहुत-बहुत बधाई एवं साधुवाद।

कविता
प्राथमिक अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय- सराय अलावर्दी
गुरूग्राम, हरियाणा

आदरणीय संपादक महोदय!

सादर नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' पत्रिका के पिछले माह का अंक पढ़ा। एक बेहद ज्ञानवर्धक, मनोरंजक व संतुलित अंक को देखकर मन प्रसन्न हो गया। न केवल माह में हुई विद्यालयों की गतिविधियों को पत्रिकाओं में स्थान दिया गया था, बल्कि श्रेष्ठ कार्य कर रहे विद्यालयों, अध्यापकों व विद्यार्थियों पर लिखे आलेखों को भी पत्रिका में स्थान दिया गया था। 'हिंदी दिवस' के उपलक्ष्य में प्रकाशित लेख' आपकी हिंदी आपसे कुछ कह रही है' मन को झकझोरने वाला था। 'बाल सारथी' हर बार की तरह बच्चों के लिए ज्ञानवर्धक सामग्री से भरपूर था। डॉ.घमंडीलाल अग्रवाल की वैज्ञानिक पहेलियाँ हमें खूब भाती हैं।

श्रीभगवान बव्वा
प्रवक्ता अंग्रेजी
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
लुखी, रेवाड़ी

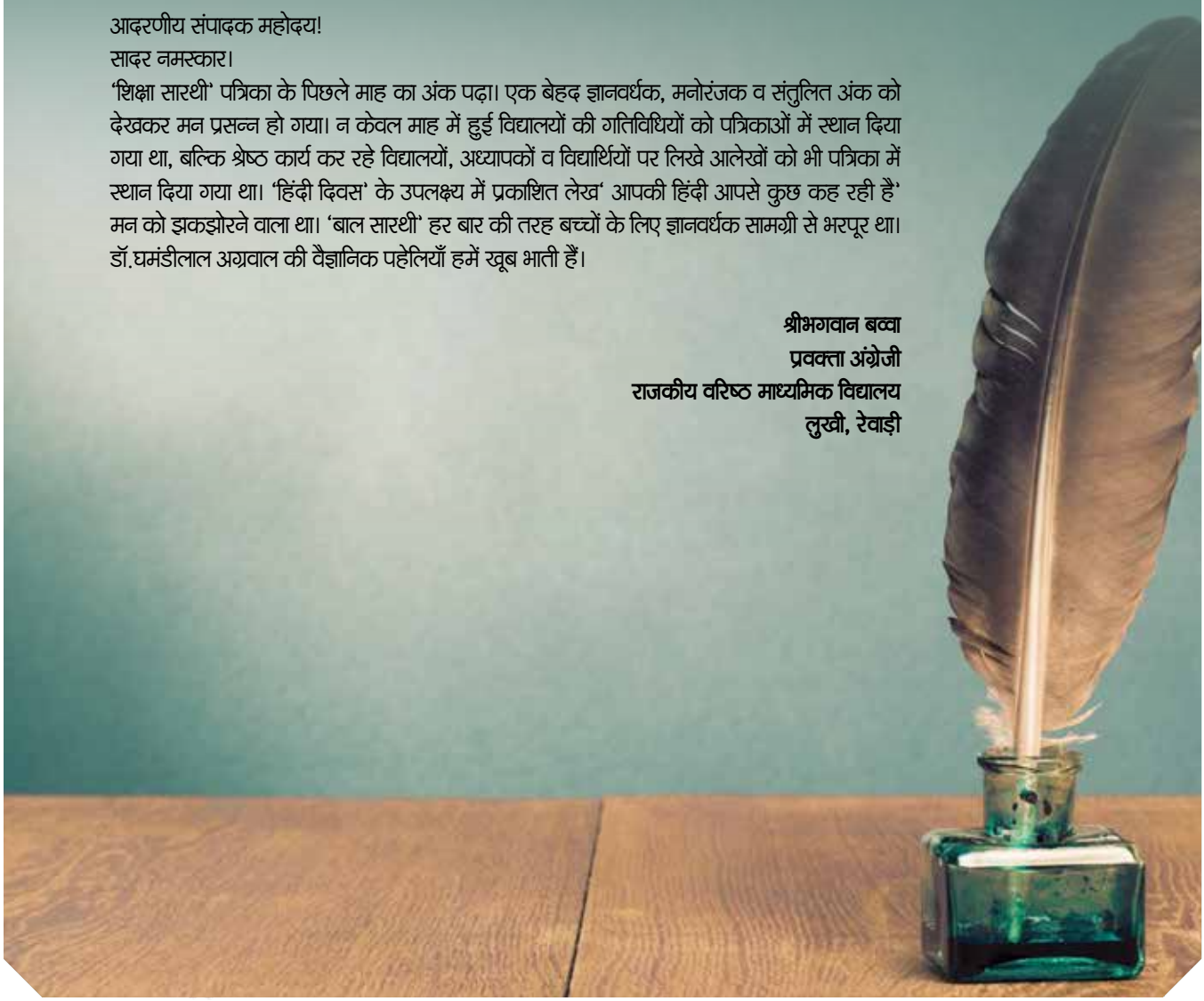

हमें न काटो

हमें न काटो!
छाँव, लकड़ियाँ, फल देते हैं,
वर्षा लाकर जल देते हैं,
हमें न काटो, हमें न काटो-
हमें न काटो!

हमसे वसुधा पर हरियाली,
हमसे जीवन में खुशियाली,
हम ही धरती के जीवों को-
एक सुनहरा कल देते हैं।
हमें न काटो, हमें न काटो-
हमें न काटो!

पूरी करते जिम्मेदारी,
ताकि जिएँ सुख से नर-नारी,
हरें प्रदूषण वायु और ध्वनि-
हम संकट का हल देते हैं।
हमें न काटो, हमें न काटो-
हमें न काटो!

भीषण गरमी खूब सताती,
देह तनिक भी चैन न पाती,
हिला टहनियों को तब अपनी-
तुम पर पंखा झल देते हैं।
हमें न काटो, हमें न काटो-
हमें न काटो!

बैठो पार ज़रा बतियाओ,
खीस निपोरो हँसो-हँसाओ,
चलो मान लो बात हमारी-
तुम्हें सुहाने पल देते हैं।
हमें न काटो, हमें न काटो-
हमें न काटो!

डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल
सेवानिवृत्त अध्यापक
शिक्षा विभाग हरियाणा
785/8, अशोक विहार
गुरुग्राम-122006

RNI NO: HARBIL/2012/52385

POSTAL REGD NO: HR/AB-102/17-19

आओ स्कूल चलें

बस्तों में हम सपने लेकर
कदम बढ़ाएँ हँसते-हँसते,
मेहनत का फल मीठा होगा
आसाँ होंगे मंज़िल के रस्ते,
ले संकल्प फ़तेह का मन में
कामयाबी की मिसाल बनें!

आओ स्कूल चलें !
शिक्षा से अंधकार दूर हो
ज्ञान-विज्ञान के उपवन खिलते,
शिक्षा वह जादू की शक्ति
जिससे हर द्वार हैं खुलते,
नतमस्तक हो जाये हर शै
इतने विशाल बनें,
आओ स्कूल चलें !

अनपढ़ता अभिशाप जगत में
पशु-जानवर की ज्यों चलते,
शिक्षित हो ये कलंक मिटाओ
खुशियों के दीप मिलेंगे जलते,
नयी उमंगे, नयी तरंगें
उन्नति की चाल चलें,
आओ स्कूल चलें !

कुलदीप दहिया 'दीप'
प्राथमिक अध्यापक
राजकीय प्राथमिक पाठशाला
भंगो, ब्लॉक- तावडू
जिला- नूँह

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114